Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 42 अंक-41
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 26 दिसम्बर से 01 जनवरी 2019 तक
पौष कृष्ण चतुर्थी से पौष कृष्ण एकादशी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

जन सेवा है स्वर्ग.... पृष्ठ- 2

बार-बार होता... पृष्ठ- 4

कर्तव्य पथ के महानायक... पृष्ठ- 5

सम्पूर्णता का पर्याप.. पृष्ठ- 7

हार से सबक ले... पृष्ठ- 12

- **खगोलीय तथ्यों पर आधारित संविधान-सम्मत राष्ट्रीय काल गणना व वैज्ञानिक प्रणाली**
- **लोकतंत्र में शरई अदालतों का क्या काम?**
- **पाकिस्तान में सिख नेता की हत्या**
- **कुछ तो राज है उर्जित के इस्तीफे के पीछे**

राजनीति में हावी होने को अपना गोत्र और जनेऊ दिखाने लगे हैं लोग

बरसाती मेंढकों से सावधान रहने की आवश्यकता–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने कहा कि जो लोग राजनीति में तुस्टीकरण के लिए हिन्दुत्व को अपनाने से कतराते रहते थे, ऐसे लोगों को आज अपना गोत्र और जनेऊ याद आने लग गया है और मुझे लगता है कि यह भारत के सनातन आस्था की वजह से है, हमारी वैचारिक विजय है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी पर कटाक्ष करते हुए कहा है कि शेष पृष्ठ 10 पर

पड़ोसी देशों में चीन की बढ़ती पैठ चिंतनीय

भारतीय विदेश मंत्रालय को सक्रिय होने की आवश्यकता–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

विदेश मंत्रालय से जुड़ी संसद की स्थायी समिति ने अपनी रिपोर्ट में भारत के पड़ोसी देशों (श्रीलंका, मालदीव, नेपाल, आदि) में चीन की बढ़ती पैठ पर चिंता जताई है। समिति ने कहा कि इससे भारत के इन देशों में प्रभाव पर प्रतिकूल असर पड़ा है। समिति का मानना है कि यह चीन की भारत को घेरने की नीति है। समिति ने इन पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में नई ऊर्जा लाने की सलाह दी है। संसद की स्थायी समिति ने अपनी रिपोर्ट में भारत–चीन सीमा पर सड़क की हालत पर भी चिंता जताई है। समिति ने कहा कि भारत–चीन सीमा पर कई महत्वपूर्ण स्थानों पर अभी भी एक लेन वाली सड़कें हैं। यह तनाव बढ़ने के दौरान काफी जोखिम भरा हो सकता है। कई सड़कें मिलिट्री ट्रैफिक का बोझ वहन करने के लायक नहीं बनी हैं। इसी स्थिति का १९६२ में चीन फायदा उठा चुका है. समिति का मानना है कि हमें इससे सबक लेना चाहिए। रक्षा मंत्रलय ने समिति को बताया कि सड़कों के निर्माण में पर्यावरण मंत्रलय की स्वीकृति मिलने में देरी एक बड़ी अड़चन है। भारत–चीन की सीमा पर मौजूदा हालात और डोकलाम को ध्यान में रखते हुए समिति ने सरकार से सड़कों की स्थिति सुधारने की सिफारिश की है। स्थायी समिति ने अपनी रिपोर्ट में डोकलाम में चीन की घुसपैठ को भारत, भूटान और चीन ट्राई जंक्शन पर मौजूदा हालात को बदलने की साजिश बताया। समिति के मुताबिक यह भारत के सुरक्षा हितों के खिलाफ था। चीन का यह कदम १९८८ और १९९८ के समझौता के खिलाफ था। डोकलाम भारत के लिए संप्रभुता का नहीं बल्कि देश की सुरक्षा का विषय था। समिति ने सुरक्षाबलों द्वारा चीन की पीपुल्स लिबरेशन शेष पृष्ठ 10 पर

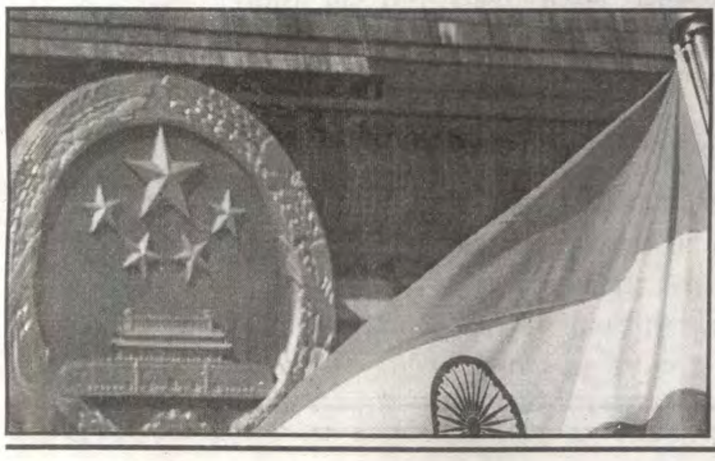

जन सेवा है स्वर्ग की सीढ़ी

मनुष्य मूलतः संवेदनशील प्राणी है। कोई कोई विरला व्यक्ति ही पत्थर दिल होता है जो कि दूसरों को मुसीबत में फंसा देखकर तमाशबीन बनकर अपने सौभाग्य पर कहं कहे लगाता हो। वरना अधिकांश लोग दूसरों के दुःख दर्द, तकलीफ में आगे बढ़कर मदद का हाथ बढ़ा देते हैं। कुछ समय पहले जब दक्षिण भारत के तट्टीय भागों में सुनामी से जान माल की भारी तबाही हुई थी जब देश–विदेश के अनेक मानवाधिकार संगठनों तथा व्यक्तियों ने ना केवल सहायता की बल्कि उन अनाथ बच्चों को भी गोद लिया, जिनके माता–पिता सुनामी की त्रासदी का शिकार हुए थे। असम कें नर सेवा ही नारायण सेवा हैं दुःख दर्द में जरूरत मंदों की सेवा करना परमात्मा की सेवा करना ही तो है। सर्व ऑफ मैन काइण्ड इज सर्विस ऑफ गाड कहा जाता है। आपको याद होगा कि मुगलों के साथ युद्ध में गुरू गेविन्द सिंह जी तीर चलाते थे तब उसके साथ इतना सोना जरूर लगा देते थे जिससे आहत/मृतक शत्रु के दाह संस्कार का खर्च पूरा हो सके। साथ में वह इस बात का भी ध्यान रखते थे कि युद्ध में प्यासे लोगों को पानी पिलाया जा सके तथा जख्मी लोगों की मरहम पट्टी भी की जा सके। अपने शत्रु के बारे में इस प्रकार की सेवा भावना रखना सचमुच धन्य हैं अगर ध्यान किया जाये तो सभी तरफ जनसेवा को सर्वोपरि माना जाता है। सिख धर्म के संस्थापक बाबा गुरू नानकदेव ने भूखों, नंगों तथा लाचारों के लिये लंगर की प्रथा शुरू की थी। उन्होंने लोगों को 'किरत करे, अते बंड के खाओं' अर्थात् परिश्रम करो तथा वांट कर खाओं' का पाठ पढ़ाया तथी तो आजकल लगभग सभी गुरूद्वारों में दोनों समय लंगर की रोटी तथा चाय पानी की व्यवस्था की जाती है। सिख धर्म के मुताबिक गुरूद्वारों में आने वाले श्रद्धालुओं के 'जोड़ों की सेवा' सबसे बड़ा पुण्य माना जाता है। गुरूद्वारों की मरम्मत तथा नव निर्माण में श्रद्धालुओं द्वारा 'कार सेवा' को उत्तम सेवा माना जाता है। एक पंजाबी फिल्म के गाने के मुताबिक जेतूं बेलीयाख, तन मन दे-नाल, सेवा करदा जायेंगा, सतनाम वाहे गुरू करदा भवसागर तोंतर जायेंगा।'

हमारे में से किसी ने परमात्मा के तो दर्शन नहीं किये। कुछ लोगों का यह दृश्य निश्चय है कि दीन दुखियों की निष्काम सेवा से प्रभु दर्शन किये जा सकते हैं। पहले समय में दानी/धर्मात्मा लोग यात्रियों की सहायता के लिए धर्मशालायें बनवाते थे, पानी पीने के लिए कुएं, हैंडपम्प, बावड़िया बनवाते थे और छायादार पेड़ लगवाते थे। आजकल कुछ दानी तथा मानवतावादी लोग शमशान भूमियों पर दाहसंस्कार के लिये आये लोगों के बैठने के लिये जगह बनवाते हैं। वहां पंखे तथा कूलर लगवाते हैं। कुछ लोगों द्वारा अपनी कमाई का दसवां हिस्सा जनसेवा/जनकल्याण के लिये सुरक्षित रखने की आज भी शानदार परम्परा कायम है। आज भी ऐसी बहुत सारी चैरिटेबल ट्रस्ट है जो कि धर्मार्थ चिकित्सालय चलाती हैं, मरीजों को मुफ्त दवाईयां देती है, उनके आपरेशन, दवाईया तथा ठहरने का मुफ्त प्रबंध करती है। कुछ संस्थाओं द्वारा गरीब बच्चों की मुफ्त शिक्षा ही नहीं दी जाती है बल्कि पढ़ने के बाद उनकी नौकरियां लगवाने तथा विवाह शादी का भी प्रबंध करती हैं। कुछ लोग नौकरियां लगवाने तथा विवाह शादी का भी प्रबंध करती हैं। कुछ लोग मानव सेवा संघ के सभी मिलकर जनसेवा करते है। आजकल कुछ मानवाधिकार संस्थाएं रक्तदान, नेत्रदान तथा अंगदान के पुण्यकार्य को बढ़ावा देने का कार्य कर रहे हैं। गरीब कन्याओं तथा विधवाओं का विवाह करा रहे हैं। महिलाश्रम, वृद्धाश्रम, चला रहे हैं। मेरे गुरू प्रो. मुंशीराम जी भी अपनी तनखाह का एक न्यूनतम हिस्सा पारिवारिक जरूरतों को पूरा करने के लिये रखने के बाद बाकी सारी तनख्वाह जनहित में खर्च कर देते है। उनके गुरू श्री दंसोदी राम कपूर जिन्हं वीर जी कहा जाता है नौकरी छोड़कर जनसेवा में ही लग गये थे। उन्होंने पटियाला में एक पिंगलवाड़ा विधवाओं, अनाथों तथा गरीबों की सेवा को ही अपना जीवन मान लिया तथा शिक्षा संस्थायें खोली। लावारिस मुर्दों का संस्कार करते थे। आज भी कई लोग जनसेवा में भगवान के दर्शन कर रहे हैं। कुछ विदेशी ईसाई संगठन देश के कुछ भागों में जनसेवा एक अहम काम कर रहे हैं। जनसेवा के कारण 'मदर टैरेसा' को भारत रत्न से सम्मानित किया गया। कुछ काले भेड़ें जनसेवा के नाम पर शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह आप यदि किसी योजना में दीर्घकाल के लिए निवेश करना चाहते है तो शुक्रवार के दिन प्रातः ८.०० बजे से १०:३० बजे के मध्य करेंगे तो बेहतर परिणाम मिलने की सम्भावना है। जरूरी नहीं है कि आप जिससे अपेक्षा करते है, वह आपके भावनाओं के अनुकूल ही चलें।

वृष : जीवन चुनौतीपूर्ण है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। हर अपेक्षा संघर्ष का मार्ग प्रशस्त करती है। जिसने अपने चित्त को संयम और धैर्य का अभ्यास करा लिया, वह हर कष्ट का सामना दृढ़तापूर्वक कर सकता है।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों का आर्थिक प्रयास सफल साबित हो सकता है। जिस कार्य के लिए आप निरन्तर संघर्ष कर रहें है, उसके लिए समय अनुकूल आने वाला है। सम्भवतः आप हर वह कार्य आसानी से कर लेते है, जिसमें कोई बाध्यता या दबाव न हो।

कर्क : किसी बात को बार–बार दोहराया जाये तो, वह हमारे मन में गहराई तक अपनी पैठ बना लेती है। और हमें उस पर यकीन होने लगता है। जिस व्यक्ति पर आप–अपना सब कुछ न्यौछावर कर रहें है, वही आपके रिश्तों में खटास पैदा कर रहा है।

सिंह : दरअसल खुशी के पल बड़ी मुश्किल से मिलते है, इसलिएं आप उन्हे लेकर बड़े ही असुरिक्षत है। वह अहसास या खजाना सचमुच बरकरार है या नही यह जानना अति जरूरी है। कुछ लोग इस सप्ताह दूर की यात्रा भी कर सकते है।

कन्या : इस सप्ताह आय की अपेक्षा व्यय आपकी चिन्ता का कारण बन सकती है। समय के अनुरूप प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन होना स्वाभाविक है, इसलिए आप भी अपने स्वभाव को बदलने का प्रयास करें। कुछ लोग वस्तुओं का क्रय–विक्रय कर सकते है।

तुला : मानसिक अस्थिरता का दूर होने का समय आ गया है। विपरीत सेक्स के प्रति अधिक रूझान आपकी मर्यादा को धूमिल कर सकता है, अतः सावधानी बरतें। धार्मिकता का वातावरण आपके परिवार में खुशनुमा माहौल उत्पन्न कर सकता है।

वृश्चिक : जिन लोगों की सन्तान किशोरवस्था में प्रवेश कर चुकी है। वर्तमान समय तकनीक का जमाना है। आज का कम्प्यूटर, लैपटाप और मोबाइल का उपयोग अनिवार्यता बनते जा रहें।

धनु : असुरक्षा ही प्यार में एक–दूसरे की अहमियत याद दिलाता है। प्यार में असुरक्षा की भावना को रोका नहीं जा सकता और न ही नजरअंदाज किया जा सकता है। इसके नयेंपन की यही जान है।

मकर : यह सप्ताह कुछ लोगों के कैरियर व व्यवसाय के लिए परिवर्तनकारी साबित हो सकता है। आत्मविश्वास में कमी न आने दें और धैर्य पूर्वक कार्य करते रहें। समय आपके अनुकूल रहेगा, प्ररन्तु विरोधी आपको व्यर्थ में परेशान कर सकते है।

कुम्भ : इस सप्ताह कुछ लोग अपने आफिस में सामंजस्य न बिठा पाने के कारण मानसिक रूप से व्यथित हो सकते है। सक्रियता और सकारात्मक सोंच हर समस्या पर नियत्रण स्थापित करने में सहायक सिद्ध होती है। किसी अनजाने व्यक्ति से भेंट लाभकारी सिद्ध हो सकती है।

मीन : इस सप्ताह कुछ लोगों को किसी समारोह में शिरकत करने का अवसर मिलेगा परन्तु ध्यान रखें किसी से विवाद करने से बचें। क्योंकि आपकी भाषा का तीखापन कहीं भ्रामक संदेश न पहुँचा दें।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।५।।

मैं उन गुरु महाराज के चरण करल की वन्दना करता हूँ, जो कृपा के समुद्र और नररूप में श्रीहरि ही हैं और जिनके वचन महामोहरूपी घने अन्धकार के नाश करने के लिये सूर्य–किरणों के समूह हैं।।५।।

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।
अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू।।

मैं गुरु महाराज के चरण कमलों की रज की वन्दना करता हूँ, जो सुरुचि (सुन्दर स्वाद), सुगन्ध तथा अनुराग रूपी रस से पूर्ण है। वह अमर मूल (संजीवनी जड़ी) का सुन्दर चूर्ण है, जो सम्पूर्ण भवरोगों के परिवार को नाश करने वाला है।।१।।

सुकृति संभु तन बिमल बिभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती।।
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किएँ तिलक गुन गन बस करनी।।

वह रज सुकृति (पुण्यवान् पुरुष) रूपी शिवजी के शरीर पर सुशोभित निर्मल विभूति है और सुन्दर कल्याण और आनन्द की जननी है, भक्त के मनरूपी सुन्दर दर्पण के मैल को दूर करने वाली और तिलक करने से गुणों के समूह को वश में करने वाली है।।२।।

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।।
दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू।।

श्रीगुरु महाराज के चरण–नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करने वाला है; वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं।।३।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 26 दिसम्बर से 01 जनवरी 2019 तक

अध्यक्षीय

सज्जन को मिल ही गई सजा

यह घटना १९८४ की है जब इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद आतताइयों ने हजारों लोगों की हत्या कर दी थी। जिन लोगों ने १९८४ को अपने सामने घटित होता देखा है, उनके भीतर यह सिहरन भरी स्मृति कभी नहीं जाएगी कि किस बेरहमी से तब लोग मारे गए थे, उनके घर लूटे गए थे और उसके बाद किस तरह मामलों की जांच रोकी गई थी, उन्हें दर्ज तक नहीं किया गया था। वर्ष १९८४ की इसी सिख–विरोधी हिंसा के एक मामले के लिए सज्जन कुमार को सुनाई गई उम्रकैद की सजा का एक बड़ा प्रतीकात्मक मूल्य है। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि गुनहगार कितने भी ताकतवर क्यों न हों, देर–सबेर इंसाफ की जद में आ जाते हैं। इस नैतिक बल से ज्यादा यह लोकतांत्रिक भरोसा पुख्ता हुआ है कि चुनावों की परिणामवादी राजनीति के समानांतर और उससे आगे हमारी व्यवस्था की कई और परतें हैं, जो तमाम बाधाओं के बावजूद न्याय सुनिश्चित करती हैं, क्योंकि यह अनुभव आम है कि इस देश में राजनीति जैसे न्याय के खिलाफ खड़ी है। ताकतवर लोग हमेशा अपराधियों को बचाने में जुटे रहते हैं। यह आजाद भारत की अराजकता के सबसे कलंकित तीन दिन थे दुर्भाग्य से ऐसी हिंसा हमें बाद के दौर में भी देखने को मिली है, लेकिन आज १९८४ की हिंसा का इंसाफ होता दिख रहा है तो हम उम्मीद कर सकते हैं कि देर–सबेर सामूहिक हिंसा के दूसरे मामलों का भी इंसाफ होगा। महज दो साल के राजनीतिक अनुभव पर प्रधानमंत्री बन गए राजीव गांधी ने तब यह हैरान करने वाला बयान दिया था कि बड़ा पेड़ गिरता है, तो धरती कुछ हिलती ही है।यह वक्तव्य भले नादानी में दिया गया हो, लेकिन आने वाले दिनों में तमाम दंगाइयों को बचाया गया, जिसका गुनाह कांग्रेस सरकार पर जाता है। यह अनायास नहीं है कि १९८४ के उन चुनावों के तुरंत बाद कांग्रेस ऐसी जीती, जैसी इस देश में आज तक कोई पार्टी नहीं जीती. उसे लोकसभा की ४०० से ज्यादा सीटें मिलीं और भारतीय जनता पार्टी को महज दो सीटें मिलीं। यह बात कुछ स्तब्ध करती है कि इतनी बड़ी हिंसा के बावजूद १९८४ में जनता ने कांग्रेस को इतने बड़े पैमाने पर जीत क्यों दिलाई? क्या यह हमारे चुनावी लोकतंत्र का एक काला पहलू है या हम भीड़ की हिंसा के ऐसे आदी हैं और इस कदर सांप्रदायिक हैं कि भीड़ की हिंसा को प्राकृतिक न्याय का हिस्सा मान लेते हैं? अफसोस की बात यह है कि आने वाले तमाम वर्षों में कांग्रेस और भाजपा एक–दूसरे से राजनीति करती रही हैं। २००२ पर बयान देने वाली कांग्रेस को १९८४ याद नहीं आता है। वित्तमंत्री अरुण जेटली दिल्ली हाइकोर्ट के फैसले के बाद बयान देने आए, तो उन्होंने बिल्कुल उचित ही सज्जन कुमार को १९८४ की हिंसा का प्रतीक बताया।यह भी बिल्कुल ठीक कहा कि वह पूरी हिंसा कांग्रेस के नेतृत्व में हुई और कांग्रेस नेताओं ने इस हिंसा के आरोपियों को बचाने का काम किया। हिंसा के आरोपी बाद में कांग्रेस सरकारों में मंत्री भी रहे, यह बात अपने–आप में शर्मनाक है। ऐसा भी नहीं कि भारतीय समाज में सांप्रदायिक कत्लेआम और भीघ्ड़ की हिंसा का आखिरी उदाहरण है इसके बाद भी देश के अलग–अलग हिस्सों में सांप्रदायिक हिंसा बड़े पैमाने पर हुई है और भीड़ की हिंसा एक नए चिंताजनक तत्व की तरह पहचानी जा रही है, लेकिन यहां भी राजनीतिक दलों की अपनी प्राथमिकताओं के हिसाब से तय किया जा रहा है कि किस मामले में जांच होगी और किसमें नहीं है।एक तरह से देखें, तो हमारी पूरी राजनीति इंसाफ को जैसे लगातार असंभव बनाती जा रही है। ऐसे मामलों में कभी किसी सज्जन कुमार के खिलाफ फैसला आता है, तो एक बड़ी उम्मीद जागती है कि कभी न कभी तो इंसाफ अपना काम करेगा।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

कुछ तो राज है उर्जित के इस्तीफे के पीछे

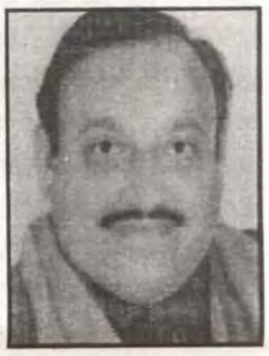

गत सप्ताह भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर उर्जित पटेल ने इस्तीफा देकर उन चर्चाओं को बल दे दिया कि अब और इस संस्थान की गरिमा दांव पर नहीं लगा सकते हैं। लोगों के जिस सवाल के साथ २०१८ का साल शुरू हुआ था लगता है उस सवाल का जवाब अभी तक नहीं मिला है, कौन है जिसके इशारे पर भारत की इन तमाम संस्थाओं की साख को दांव पर लगाया जा रहा है। उर्जित पटेल जो हमेशा सरकार के दबाव में काम करने वाले गवर्नर के तौर पर ही देखे गए, अचानक क्या हुआ कि वे दबाव से निकलने के लिए तड़प उठे, क्या वे अपने करियर पर सरकार से झगड़े का यह दाग नहीं रखना चाहते थे। अगर यह लड़ाई स्वायत्तता को दांव पर लगाने की है तो इसमें क्या है। हालांकि उन्होंने कहा कि निजी कारणों से मैंने तुरंत ही अपने मौजूदा पद से इस्तीफा देने का फैसला किया है। ये मेरे लिए सम्मान की बात है कि भारतीय रिजर्व बैंक में मुझे कई वर्षों तक कई पदों पर काम करने का मौका मिला। हाल के वर्षों में आरबीआई की उल्लेखनीय उपलब्धियों की वजह आरबीआई के कर्मचारियों, अफसरों की कड़ी मेहनत और प्रबंधन का सहयोग रहा है। मैं इस अवसर पर अपने सहयोगियों और सेंट्रल बोर्ड के निदेशकों के प्रति आभार प्रकट करता हूं। उन्हें अच्छे भविष्य की शुभकामनाएं देता हूं। निजी कारणों से मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमण्यम भी इस्तीफा दे गए, और निजी कारणों से उर्जित पटेल भी। नवंबर के महीनें में जब यह विवाद आया कि सरकार चाहती है कि रिजर्व बैंक के पास जो ३ लाख ६० हजार करोड़ का रिजर्व है वो दे दे। आखिर सरकार को क्यों जरूरत पड़ी कि वो रिजर्व खजाने से पैसा ले जबकि वह दावा करती रहती है कि आयकर और जीएसटी के कारण आमदनी काफी बढ़ गई है। रिजर्व बैंक अपने सरप्लस का एक साल में ५०,००० करोड़ के आसपास देता ही है लेकिन ३ लाख ६० हजार करोड़ देने के नाम से रिजर्व बैंक के कदम रूक गए। रिजर्व बैंक अपनी पूंजी उन बैंकों को नहीं देना चाहता था जिनके पास कर्ज देने के लिए पूंजी नहीं है। जिनका एनपीए अनुपात से कहीं ज्यादा हो चुका है। २० नवंबर की रिजर्व बैंक के बोर्ड बैठक को लेकर ही चर्चा थी कि उर्जित पटेल इस्तीफा दे देंगे मगर ऐसा नहीं हुआ। लगा कि सब सुलझ गया। मगर कोई कब तक बिगाड़ के डर से मन की बात नहीं कहता २०१६ में उर्जित पटेल का कार्यकाल पूरा हो रहा था। ५ सितंबर २०१६ को गवर्नर बने थे। २०१३ में डिप्टी गवर्नर बने थे। रिजर्व बैंक के गवर्नर का इस्तीफा देना सामान्य बात नहीं है। पूर्व गवर्नर रघुराम राजन का कहना है कि आरबीआई गवर्नर उर्जित पटेल द्वारा इस्तीफा एक गंभीर चिंता का विषय है। एक सरकारी कर्मचारी द्वारा इस्तीफा देना विरोध का प्रतीक होता है। पूरे देश को इसे लेकर चिन्तित होना चाहिए। रघुराम राजन को और साफ करना चाहिए कि क्यों उर्जित पटेल के इस्तीफे को लेकर पूरे देश का चिन्तित होना चाहिए, क्यों उर्जित पटेल का इस्तीफा विरोध का प्रतीक है, उसके क्या मायने हैं, यह समय चीजों को साफ साफ देखने का भी है, अर्थव्यवस्था के भीतर वे कौन से हालात पैदा हो रहे हैं जो रिजर्व बैंक की स्वायत्तता को नुकसान में डालना चाहते हैं। राजन ने भी डिप्टी गवर्नर विरल आचार्या की बात का एक तरह से समर्थन किया है कि सरकार को रिजर्व बैंक पर हाथ डालने का प्रयास नहीं करना चाहिए, यह अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा नहीं है। एक बार आपने किसी को गवर्नल और डिप्टी गवर्नर नियुक्त कर दिया तो आपको उनकी बात सुननी चाहिए। तो क्या उर्जित पटेल को नहीं सुना जा रहा था। इस्तीफे के बाद वित्त मंत्री अरुण जेटली का बयान आया कि उर्जित पटेल ने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर और डिप्टी गवर्नर के रूप में देश के प्रति जो योगदान दिया है, उसके प्रति सरकार आभार प्रकट करती है। उनके साथ काम करने का अनुभव काफी अच्छा रहा। उनकी विद्वता का मुझे काफी लाभ मिला। मैं उन्हें शुभकामनाएं देता हूं। डॉ० उर्जित पटेल उच्च कोटि के अर्थशास्त्री हैं और व्यापक अर्थव्यवस्था की गहरी समझ रखते हैं। उन्होंने बैंकिंग व्यवस्था को अराजकता से निकालकर अनुशासन की स्थिति में पहुंचाया है। उनके नेतृत्व में आरबीआई ने वित्तीय स्थिरता बहाल की है। वे पूरी तरह से पेशेवर हैं। उनकी ईमानदारी संदेह से परे है। वे रिजर्व बैंक में ६ साल डिप्टी गवर्नर और गवर्नर रहे हैं। वो अपने पीछे एक बड़ी विरासत छोड़ रहे हैं। हमें उनकी कमी खलेगी।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

बार-बार होता गर्भपात व गर्भस्राव की चिकित्सा

✍ आयुर्वेदाचार्य डॉ. नीलम अग्रवाल

आयुर्वेदानुसार गर्भाशय में वायु एवं पित्त के प्रकोप से गर्भपात होता है। गर्भधारण से लेकर प्रसवकाल तक योनि में रक्तस्राव होना इस रोग के अन्तर्गत आता है। गर्भावस्था के चार मास के भीतर गर्भाशय से भ्रूण गर्भाच्युतहोने पर उसे गर्भास्राव कहते हैं। ५ महीने से ६ महीने के अन्दर होने पर गर्भपात कहलाता है। ७वें महीने से गर्भकाल के पूर्ण होने को अकाल प्रसव कहते हैं जोकि गंभीर स्थिति होती है।

गर्भपात/गर्भस्राव के कारण

बार–बार गर्भपात व गर्भस्राव के मुख्य कारणों में एक तो कम उम्र में ही (स्त्री–पुरुष दोनों का अल्पायु में ही) सन्तान करना क्योंकि ऐसे में स्त्री का गर्भाशय बहुत कमजोर होता है और दोनों ही (पति–पत्नी) इतने परिपक्व भी नहीं हो पाते कि वह इस समय की विशेष जानकारियों को जान सकें। गर्भावस्था के समय तेज बुखार, गर्भाशय पर चोट या आघात, खून का कम बनना, बार–बार सीढ़ियाँ चढ़ना, उतरना, घोड़ासवारी, ऊँट की सवारी करना, पहाड़ों पर चढ़ना, ज्यादा क्रोध, तनाव, भय, मूत्र सम्बन्धी रोग, जरायु का अपने स्थान से हटना, मलेरिया, टायफाइड होना, ज्यादा मैथुन करना। शीघ्रता से उठना या बैठना, लम्बे सफर करना, शारीरिक क्षमता से ज्यादा परिश्रम करना, आदि ऐसे कुछ कारण हैं जिनसे गर्भपात व गर्भस्राव की समस्या उत्पन्न हो सकती है। गर्भावस्था में पोषण युक्त आहार का सेवन न करना भी गर्भपात का प्रमुख कारण है।

गर्भपात/गर्भस्राव के लक्षण

गर्भोत्पत्ति रक्तस्य सशूलं दर्शन भवेत।
आद्यतुर्थात्ततो मासात्प्रसवेद्‌गर्भ विद्रवः।।

अर्थात् गर्भपात की प्रथम अवस्था में पेट से दर्द और रक्तस्राव होता है। चार मास तक गर्भ तरल अवस्था में रहता है। यदि इस अवस्था में गर्भपात होता है तो उसे गर्भस्राव कहा जाता है।

''ततः स्थिर शरीरस्य पातः पंचम षष्टयोः।''

अर्थात् पाँचवे तथा छठे मास के गर्भ में गर्भस्थ संतान के अंग–प्रत्यंग बनने लगते हैं। अतः इस समय गर्भ के गिरने की अवस्था को गर्भपात कहते हैं।

लक्षणों की शुरूआत–गर्भिणी के शरीर में और कंपकंपी महसूस होती है। बार–बार अंगड़ाई आना, शरीर में भारीपन, बुखार आदि लक्षण होते हैं। पुनः दर्द कमर से आरम्भ होकर पेट तक फैल जाता है। यह दर्द प्रसव के दर्द के समान होता है, दर्द के साथ प्रसवद्वार से श्लेष्मा के समान पदार्थ बहने लगता है, दर्द बढ़ने के साथ–साथ रक्तस्राव (Bleeding) भी होने लगती है, और कभी गहरा लाल, कभी काला, थक्का और कभी पतला रक्तस्राव होता है। योनि द्वार का मुख्य (जरायु का मुख) बढ़ा हो जाता है।

गर्भपात/गर्भस्राव की चिकित्सा

गर्भपात के शुरूआती लक्षण होने पर–गर्भ के स्फुरण को शान्त करने के लिए उत्पलादिगण की औषधी से सिद्ध क्षीर कर उपयोग करना चाहिए।

❖ गर्भपात के शुरू होते ही गर्भिणी को शान्त भाव से चित्त लेटा देना चाहिए, घूमने–फिरने, सीढ़ियाँ चढ़ने–उतरने की मनाही है, पैरों को ऊँचा कर देना चाहिए तत्पश्चात् डॉक्टर द्वारा दी गई दवाएँ सेवन करवाएँ।

❖ रक्तस्राव शुरू होने पर या दर्द के उत्पन्न होने पर बाह्य प्रयोग एवं अन्तः प्रयोग के लिए स्निग्ध एवं शीतल चिकित्सा करें। क्षीरी वृक्षों के कल्क में घृत मिलाकर पिचु के रूप में (Inpessary form) योनि के अन्दर धारण कराएँ, साथ ही शतधौत घृत के साथ अभ्यंग कराके शीतल जल से स्नान कराना चाहिए, इसके साथ–साथ नीलोफर तथा कमल केसर, बोलबद्ध इत्यादि से सिद्ध दुग्ध, शहद, शर्करा मिलाकर पिलाएँ।

❖ दर्द खत्म करने के लिए माषपर्णी, मधुयष्टी तथा गोक्षुरू से सिद्ध दुग्ध में शहद एवं शर्करा डालकर पिलाएँ, अथवा कुश–कांस गन्ने की डाभ की जड़ एवं गोखरू का क्वाथ पिलाएँ। सौंठ, देवदारू तथा मुलहेठी का क्वाथ भी पिलाना लाभकारी होता है। गर्भ अपने स्थान से खिसका हो तो तृणपंचमूल क्षीर दें। इससे मूत्र आने में कष्ट, दाह एवं प्यास का शमन होगा।

❖ यदि गर्भ अपने स्थान से हटा देने पर रक्तस्राव हो तो, राल १२ ग्राम, समुद्रशोष २४ ग्राम, लहसुन ३ ग्राम, मुक्तापिष्टी भस्म १) ग्राम सबको कूट–पीसकर रख लें। गर्भ गिरने की संभावना में ३–३ ग्राम औषधि ४–४ घंटे के पश्चात् सादा शर्बत अथवा नारियल के पानी के साथ दें। अधिक रक्तस्राव होने पर १–१ ग्राम प्रति २ घंटे पर दें। रक्त आना बंद हो जाने पर औषधि देना बंद कर दें। इस चिकित्सा के साथ–साथ बर्फ में साफ वस्त्र तर करके योनि में रखवाएँ अथवा रक्तस्राव की अवस्था में बोलपर्पटी ३६०–३६० मिग्रा॰ की मात्रा में अनार शर्बत के साथ दिन में ३ बार दें। इससे रक्तस्राव शीघ्र बन्द हो जाता है।

उपरोक्त लक्षणों की शान्ति के पश्चात् रोगिणी को गर्भपाल रस का नियमित सेवन कराएँ। इसके लिए गर्भपाल रस की १–२ गोली दिन में २ बार १२ ग्राम भीगे मुनक्का के स्वरस के साथ दें। अथवा गर्भपाल रस को त्रिवंग भस्म या वंग भस्म के साथ सेवन कराएँ।

सम्भावित अथवा आशंकित गर्भपात की चिकित्सा–इस प्रकार की गर्भपात की अवस्था में शीतल एवं स्निग्ध चिकित्सा करनी चाहिए। पीड़ा/वेदना की स्थिति में माषपर्णी, मुदगपर्णी, मुलहेठी एवं गोखरू इनसे सिद्ध दुग्ध में खाण्ड और शहद मिलाकर पिलाना चाहिए।

रक्तस्राव/रक्तरोधक औषधियों में–लोध्र, नागकेसर, लाक्षा, दूर्वा, हीराबोल, चन्दन, खस, आँवला, गुलाब, वासा, माजूफल, शुद्ध स्फटिका, खूनखराबा इत्यादि औषधियों का सेवन डॉक्टर के अनुसार कराएँ।

गर्भाशय को ताकत देने वाली औषधि–शतावरी चूर्ण, शतावरी घृत, फलघृत, यशद भस्म/लौह भस्म, मण्डूर भस्म, धात्री लौह इत्यादि कारगर दवाएँ हैं।

अपरिहार्य गर्भपात की चिकित्सा–इस स्थिति के गर्भपात (रक्तस्राव के साथ गर्भाशय की अन्तःकला या अपरा (प्लेसेण्टा) या गर्भपिण्ड के टुकड़े निकलने पर) को रोकने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अपितु गर्भाशय शुद्धि के उपक्रम करें। गर्भ एवं उससे संबंधित सभी रचनाओं का बाहर आ जाना पूर्ण गर्भपात तथा कुछ अवशेष अवशिष्ट रह जाना अपूर्ण गर्भपात कहलाता है।

पूर्ण गर्भपात की स्थिति में सामान्य शोणित स्थापन, बल्य, गर्भाशय बल्य, औषधियाँ दी जाती हैं और लघु सुपाच्य एवं पौष्टिक आहार बहुत जरूरी होते हैं।

अपूर्ण गर्भपात की स्थिति में–शिमूल क्वाथ, दशमूलारिष्ट, अजवायन एवं गुड़ का प्रयोग करें अथवा गर्भाशय विस्फारण एवं लेखन (DLC) करवाएँ।

लीन गर्भ की चिकित्सा–इस स्थिति में मधुर, शीत, वृहण, शोणित स्थापन, रक्तरोधक औषधियाँ देते हुए पूर्ण विश्राम करवाएँ।

कुछ महर्षियों व आयुर्वेदाचार्यों ने लिखा है कि लीन गर्भ की स्थिति में स्निग्धचिकित्सा करानी चाहिए। उड़द तिल, बिल्व, शलाटु से भावित कुल्माष खिलाएँ, तत्पश्चात् ७ दिन तक शहद मिश्रित दूध पिलाएँ।

कभी–कभी गर्भ का भली–भाँति पोषण न होने से वह सूख जाता है अथवा द्रवित होकर बह जाता है। ऐसा गर्भ बहुत समय के पश्चात् प्रसवावस्था में रहता है और वह कई वर्षों के पश्चात् हृष्ट–पुष्ट होकर जन्म लेता है।

कभी–कभी गर्भ बढ़ जाने पर भी सही पोषण न मिलने से सूख जाता है और उदर की वृद्धि रुक जाती है। ऐसी सभी अवस्थाओं में महापैशाचिक घृत, वचा, गुग्गुल आदि का प्रयोग तथा जीवनीय वृहणीयगण की औषधियों से सिद्ध घृत का उपयोग करना चाहिए। इसके सेवन से गर्भ का पुनः पोषण होता है।

बार-बार होने वाले गर्भपात की चिकित्सा

पहले बताए गए परिहार्य/सम्भावित गर्भपात के उपक्रमों के साथ त्रिवंग भस्म आमलकी रसायन, धात्री लौह, गर्भपालरस, वंगशिल, फलघृत दें। इनके अतिरिक्त–

❖ वंशलोचन ४ ग्राम, विशुद्ध केशर, गुलाब के फूल, सफेद जीरा, प्रत्येक औषधि ४ ग्राम, तुलसी के पत्ते, जावित्री, प्रत्येक २४ ग्राम, सहदेई ४८ ग्राम सब औषधियों को अलग–अलग पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। गर्भ ठहर जाने के पश्चात् १ गोली दिन में ३ बार एक सप्ताह तक खिलाएँ। तत्पश्चात् १ गोली प्रातः–सायं प्रसव समय काल तक खिलाएँ। निरन्तर सेवन से गर्भपात की सम्भावना नहीं रहती।

❖ **अशोकघृत** बार–बार होने वाले गर्भपात की एक विश्वसनीय दवा है। इसे गर्भधारण के बाद प्रसवकाल तक १–२ छोटे चम्मच दिन में २ बार दूध से सेवन कराना चाहिए।

❖ **फलघृत**–इसका उपयोग बार–बार गर्भपात की अवस्था में किया जाता है, जिस महिला को बार–बार गर्भपात की आशंका या मरे हुए या अल्पायु बालक पैदा होते हों, एक सन्तान के होने के पश्चात् दोबारा सन्तान न होती हो, गर्भ गिर जाता हो, तो इस घृत का सेवन गर्भावस्था से प्रसवकाल तक दूध के साथ २–२ चम्मच दिन में दो बार सेवन करना चाहिए।

❖ **मोती पिष्टी**- प्रवाल पिष्टी दोनों १२०–१२० मि॰ग्रा॰ + सितोपलादि चूर्ण २ ग्राम। इन्हें १२ ग्राम आँवले शेष पृष्ठ 11 पर

कर्तव्य पथ के महानायक राम

✍ कैप्टन आर. विक्रम सिंह

मर्यादा पुरुषोत्तम राम एक ऐसे राष्ट्र निर्माता भी है जिन्होंने संस्कृति और इतिहास के घुमावदार रास्तों को सीधा करने का काम अभ्दुत तरीके से किया। राम का वनगमन और वह भी दक्षिण दिशा में? यह कई प्रश्न खड़े करता है और उनके उत्तर भी देता है। वह उत्तर दिशा की ओर हिमाद्रि की सुरम्य तलहटियों की ओर भी तो प्रस्थान कर सकते थे, लेकिन नहीं। उन्होंने दक्षिण की ओर जाने का निश्चय किया और शायद यह जानते हुए कि यह क्षेत्र धर्म और संभावनाओं का क्षेत्र था। उनके साथ मात्र दो और लोग थे। सामने दक्षिण विजय का महान लक्ष्य था। उस घटनाक्रम की कल्पना करें जब विश्वामित्र राम–लक्ष्मण को राजा दशरथ से लगभग बलपूर्वक ले आते हैं। क्या मात्र आश्रम, यज्ञों, आश्रमवासियों की रक्षा करना ही उनका उद्देश्य रहा होगा नहीं, वह तो एक महत प्रेरणा से राम को लेने गए थे। उस प्रेरणा के लिए भारत सदा ऋषि विश्वामित्र का ऋणी रहेगा। ऋषि विश्वामित्र ने राम को मात्र शस्त्र विद्या ही नहीं सिखाई, बल्कि राजनीति और कूटनीति की भी शिक्षा दी। इसी के साथ एक राष्ट्रदृष्टि भी दी। आश्रम के शांत वातावरण और अग्नि के प्रकाश में दोनों भाइयों के साथ उन्होंने जब दक्षिण में धर्म साम्राज्य के विस्तार की संभावनाओं पर गहन चर्चाएं की होंगी तो आकार लेता हुआ राष्ट्र और श्रीलंका तक लहराता समुद्र उनकी कल्पनाओं में उतर आया होगा।

ऋषि ने अपनी भविष्य, दृष्टि से इस अभियान में राम–लक्ष्मण की भूमिका भी देखी होगी। सैन्य विजय हो या धर्म विजय, यह द्वंद्व भी देखी होगी। सैन्य विजय हो या धर्म विजय, यह द्वंद्व भी उभरा होगा। दक्षिण में धर्म विस्तार के प्रयासों में आ रहे प्रतिरोध को तो वह देख ही रहे थे। न जाने कितने आश्रम उजड़े थे और न जाने कितने ऋषि–मुनियों की हत्याए हुए नाच घटनाएं विश्वामित्र के दृढ़ निश्चय को डिगा नहीं सकी। वह राम–लक्ष्मण के मन की गहराइयों में दक्षिण विजय का महत्वाकांक्षी लक्ष्य मजबूती से स्थापित कर इतिहास पटल से अंर्तधान हो जात है। अब राम है और उनका लक्ष्य है। राम को अब दक्षिण जाना ही था। सेनाएं लेकर विजय अभियान पर निकलता राम के उद्दात्त लक्ष्यों के विपरीत होता, साथ मात्र धर्म प्रचारक होना भी लक्ष्य तक न पहुंचा पाता। इसलिए आवश्यक था कि एक धर्मयोद्धा के रूप में साम्राज्य एवं धर्म, दोनों आयाम साथ लेकर चला जाए। उन्होंने इस कार्य में आर्यावर्त का सहयोग नहीं लिया। तुलसी बाबा की कथा में दक्षिण के वनवासियों के प्रति राम का अनुराग कदम कदम पर प्रकट भी होता है।

वनवास के आदेश के उपरांत संपूर्ण आर्यावर्त के सामान्य जन की सहानुभूति राजमहलों के षड़यंत्र के शिकार राम के लिए थी। दक्षिण के वनवासी समाज के लिये भी वह अपने अधिकार से बेदखल किए गए राजकुमार थे। माता कैकेयी की स्वार्थपरता ने राम को एक बड़े धर्मसंकट स मुक्त कर दिया था। राम के दक्षिण प्रस्थान की कथा जैसे भारत का भाग्य विधाता स्वयं लिख रहा हो। शनि की महादशा आरंभ होने को थी और राम के जीवन का सबसे चुनौतीपूर्ण कालखंड उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। दक्षिण भारत का वनवासी समाज भगवान शिव का आराधक रहा है। गले में सर्प, शरीर पर बाघम्बर डाले शिव हमारे आदि धर्म के प्रतीक है। अपनी यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर राम शिव एवं शिव भक्तों से परिचित होते चलते है। शिव के प्रति दक्षिण समाज का अनुराग उन्हें अभिभूत करता है। धर्म के विकास और विस्तार के क्रम में हमारे ऋषि व्यवस्थाकारों को समावेशी दृष्टि ने बहुत सी स्थानीय स्तुत्य परंपराओं को सम्मानजनक स्थान दिया है। भारत सदियों से सांस्कृतिक जातीय समागम का केंद्र रहा है। मंगोल, यवन, हूण, कुषाण जैसे बहुत से जातीय समूह हमारे समाज के अंग बने। साथ ही भारत पर में कई सभ्यताएं अपनी समस्त परम्पराओं पद्धतियों के साथ समाहित होती गई। श्यामवर्णीय राम उत्तर और दक्षिण की वयः संधि पर कहीं स्थित है। राम इस एकात्म हो रहे समाज के सनातन प्रतीक के रूप में सामने आते हैं। चित्रकूट का क्षेत्र कभी राम के सैनिकों के शिक्षण प्रशिक्षण का बड़ा केंद्र बना। सरल स्वभाव के वनवासी ग्रामवासी थे तो शोषक अत्याचारी भी थे। वनवासी राम की शरण में आते हैं। यहां से प्रतिरोध फिर संघर्ष का क्रम आरंभ होता है। राम ने उन्हीं पीड़ितों, अशक्तों की सेनाएं बनाई, उन्हें खड़ा किया, रणनीतियां सिखाई और संघर्षशील बनाया। बहुत स युद्ध हुए, लेकिन निराशा के घनीभूत क्षणों में भी राम ने कभी धैर्य और कर्तव्य का पथ नहीं छोड़ा। कविवर निराला ने कितना सत्य

लिखा है, वह एक और मन रहा राम का जो न थका, जो नहीं जानता दैन्य नहीं ज्ञानता विनय। राम का राज्य बढ़ता गया। दक्षिण समाज राम का महान सहयोगी, मित्र एवं भक्त बना। इनमें निषादराज हैं, केवट समाज है और बहुत से वनवासी समूह भी। हनुमान, सुग्रीव, अंगद, जामवंत जैसे मित्र एवं भक्त भी राम की सेना के महान सेनापति बने। कहां अयोध्या का अर्थहीन विलासी जीवन कहां धर्म के महान लक्ष्य का संधान। राम की शिवभक्ति उन्हें वनवासियो में प्रिय बनाती गई। जब वह समुद्रतट पर रामेश्वरम के रूप में शिव की स्थापना करते हैं तो उनकी शिवभक्ति अपनी पूर्णता को पहुंचती है।

शिवभक्ति हमारी धर्म संस्कृति में दक्षिण से आती है। वह ऋग्वेदित देवता रुद्र के साथ एकाकर होते हैं। शिव हमारे सनातन धर्म के मेरूदंड हैं। उनके बिना तो सनातन हिंदू धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वैदिक परंपराएं विधियां क्रमशः भारतीय धर्म में समाहित होने लगती हैं और सनातन धर्म का विशाल कलेवर दिखने लगता है। जाति, समाज, वर्णविभेद औचित्यहीन लगने लगता है। राम मर्यादाओं की स्थापना करने वाले है। लंका विजय के बाद जब राम सीता से कहते हैं कि तुम अब कहीं भी जाने को स्वतंत्र हो तो एकत्रित समाज हाहाकार कर उठता है। वह स्वयं से नहीं, बल्कि सर्व समाज से सीता

शेष पृष्ठ 11 पर

१५ अक्टूबर के दैनिक जागरण के विज्ञापन में प्रधानमंत्री तथा गुजरात के मुख्यमंत्री की ओर से छपा है।

''अखण्ड भारत के निर्माता को शाश्वत आदरांजलि''

❖ यह १०० प्रतिशत गलत है। १६४७ मे देश का विभाजन सरदार पटेल की भी सहमति/स्वीकृति से हुआ था फिर उन्हें अखण्ड भारत का निर्माता कैसे कहा जा सकता है? वे भी भारत को खण्डित करने के दोषी हैं।

❖ उन्हें लौह पुरुष कहना उचित है क्योंकि उन्होंने बहुत कुशलता से ५६१ देसी रियासतों का सफलता पूर्वक विलय खण्डित भारत में कराया था।

❖ उनका पूरा नाम है सरदार वल्लभ भाई जावेर भाई पटेल

❖ उनकी नई दिल्ली स्थित कोठी की सड़क का नाम था–औरंगजेब रोड़

❖ वे मृत्युपर्यन्त (१५–१२–१६५०) उपप्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री रहे।

❖ उन्होंने सख्त व्यवहार करके हैदराबाद और जूनागढ़ रियासतों का विलय भारत में कराया था क्योंकि इनके नवाब, विलय पाकिस्तान से चाहते थे।

❖ गांधी, नेहरू और मौलाना आजाद के विरोध करने पर भी, आपने सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराकर डा० राजेन्द्र प्रसाद से उद्घाटन कराया था।

❖ आप देश विभाजन के समर्थक इसलिए हो गए थे क्योंकि समझौते में पहला प्रावधान था कि देश के १०० प्रतिशत मुस्लिमों को पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान में भेजा जाएगा।

❖ मुस्लिम प्रेमी गांधी–नेहरू ने गुप्त समझौता आपस में कर लिया था कि सारे मुस्लिमों को नहीं भेजेंगे। इसकी जानकारी पटेल को नहीं मिली थी।

❖ कांग्रेसियों का प्रचण्ड बहुमत पटेल को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में था लेकिन गांधी ने लोकतंत्र की हत्या करके जबर्दस्ती नेहरू को बनवा दिया।

❖ विश्व की सबसे ऊँची १८२ मीटर की प्रतिमा सरदार सरोवर बांध में लगा दी गई है। इसका लोकार्पण आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया है।

❖ १८२ मीटी की ऊंचाई इसलिए रखी गई हैं क्योंकि गुजरात विधानसभा में १८२ विधायक हैं।

❖ पत्रकारों द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में आपने स्पष्ट रूप से कहा था कि पूरे देश में केवल एक मुस्लिम ही राष्ट्रवादी है जिसका नाम है–जवाहर लाल नेहरू।

❖ वे जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री पद पर शेख अब्दुल्ला को बनाने के प्रखर विरोधी थे। वे नेहरू की कश्मीर नीति को देश विरोधी मानते थे।

❖ प्रतिमा स्थल केवड़िया गांव, नर्मदा, गुजरात में है। शीघ्र ही यह पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो जाएगा जिसे देखने काफी पर्यटक आया करेंगे।

❖ भारत सरकार ने नाम "स्टैच्यू आफ यूनिटी" रखा है जबकि नाम स्टैच्यू आफ आइरन लीडर रखना ज्यादा अच्छा रहता।

सावरकर वाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

खगोलीय तथ्यों पर आधारित संविधान-सम्मत राष्ट्रीय काल गणना व वैज्ञानिक प्रणाली (भारत सरकार द्वारा १६५७ से स्वीकृत)

✍ हरिकृष्ण निगम

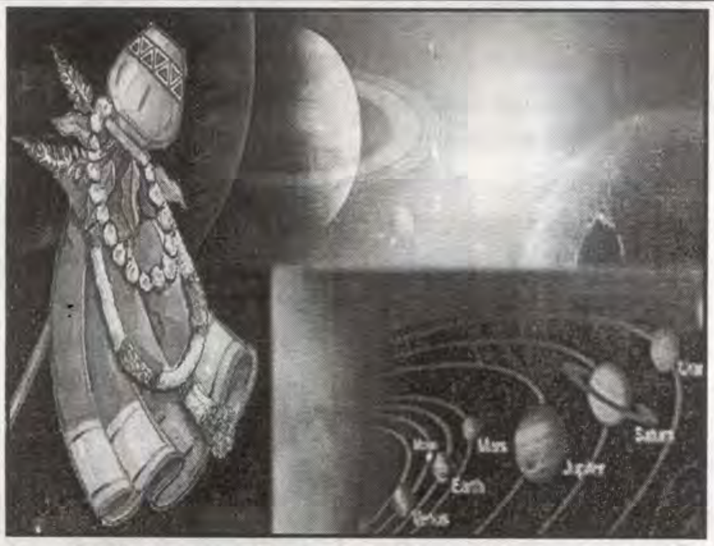

आज कल काम चलाऊ हिन्दू होने की स्वायेमान प्रदर्शन की एक अनोखी विद्या टी.वी. के साथ साथ श्रव्य दृश्य एवं मुद्रित मीडिया में खतरनाक अराजकता के साथ सर्वत्र फल फूल रही है। सिद्धान्तहीनता की विडम्बना तो इतनी निर्लज्ज दीखती है कि हाल के दीपावली के प्रसारणों में व्यवसायिक या शेयर बाजार के चैनलों पर सम्वत् २६७५ अहर्निश बड़े अक्षरों में दिखाया जाता है जो असंवैधानिक ही नही है, बल्कि हिन्दू मानस को भी अमान्य क्योंकि कभी इसके आधुनिक अंग्रेजी सदी, मास और दिनों व तिथि के क्रम से समुनुकूल बनाया जाता है जो पोप ग्रेगरी ने अपने ईसाई साम्राज्यवाद के दौर में उपनिवेशों के लिए ढाला था। पोप द्वारा वेटिकन द्वारा इंगलैंड के चर्च के विरुद्ध नया केलेण्डर बनाने में लगभग १७० दिन इंगलैंड ने उस समयतंरित इयर की धोखे घड़ी को काल्पनिक रूप से पीछे कर इंगलैंड में मारकाट व दंगो को भी जन्म दिया था जो योरोप को भी पूरी तरह हिला चुके थे। ब्रिटिश शासन की भारतीय भूमिका कलकत्ते के वायसराय या गवर्नर जनरल द्वारा फोर्ट विलियन से चलाई जाती थी और वायसराय द्वारा गठित एक शाही आयोग में जिनमें हिन्दू एवं वैदिक ज्योतिष *कालक्रम, तिथिवार* के धुरन्धर पण्डित व संस्कृत के देशी विदेशी भारत नेता भी शामिल थे उन्होंने एक समानान्तर दैनिन्दनी, ग्रह–नक्षत्रों, पर चन्द्र व सौर परिक्रमा के आधार पर बनाई थी। यह कार्य सन् १६७० मे किया गया था और जिसे सौ वर्षीय कलेण्डर (हन्ड्रेड इयर्स केलेण्डर) कहा जाता है मूलतः भारतीयों की हर सरकारी कार्य व जीवन बीमा में अपनी आयु को पुरानी जन्म कुण्डली व पुराने पारिवारिक अभिलेखों से सिद्ध करने की आदत थी, उनको सरकारी तौर पर प्रमाणित व अनुमोदित करने की आवश्यकता पड़ती थी। आज से ५० वर्ष पहले भी यह पुस्तिका हर बीमा विभागीय कार्यालय के नव व्यवसाय व बीमाकर्ता के विभाग में 'गोपनीय' सन्दर्भ के लिए अधिकारी रखते थे। मजे की बात है कि दुनियां के सभी इस्लामी देश जैसे अफगानिस्तान सीरिया व जार्डन या फिलिस्तान में भी इती दैन्दिनी को आधिकभीम माना जाता था।

ईसाई साम्राज्यवादी शासक ग्रेगेरियन काल गणना का उपयोग करते थे इसी को हमने स्वतंत्र भारत में शिरोधार्य किया जैसे हमारी कालक्रम की दिनांक पद्धति ही न हो। धार्मिक क्षेत्र में हम आज भी चन्द्रगणना का उपयोग करते हैं। सौर काल गणना कई मुद्दों में चन्द्रगणना से सरल है। सौर गणना में चन्द्र मम्स जैसे तिथि –वृद्धि तिथि–क्षय, अधिक मास, मास–क्षय आदि पेन्वी दगियाँ नही होती। चन्द्रमास में तिथि का अर्थ दिन से नहीं लिया जाता, वह होता है पृथ्वी को केन्द्र मानकर सूर्य और चन्द्र में १२ अंश का अन्तर पढ़ना। सौर गणना में दिन का अर्थ है सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त का काल का फिर ईसाई गणना की तरह मध्य रात्रि से लेकर अगली मध्य रात्रि का समय। इसीलिए सौर गणना समझने में सरल है।

पूर्णतः संविधान सम्मत होने के साथ साथ, सौर दिनांक पद्धति वैज्ञानिक है, प्रकृति से जुड़ी है और हमारे लिए गर्व की बात यह है कि यह भारतीय चिन्तन के द्वारा विकसित की हुई पद्धति रही है। लेकिन यह महान दुर्भाग्य यह है कि भारत के कथित शिक्षित च स्वाभिमानी लोग भी या तो इस पद्धति से परिचित्त नही है या शासकीय दृष्टि से प्रत्यक्ष रूप में इसके उपयोग व प्रसार की दृष्टि से जागरूक नही है, सोए हुए है। प्रशासन या सरकारी दृष्टि में सौर दिनांक या सौर कालगणना के अनेक पक्ष है जिनकी ओर ध्यान देना अपेक्षित है। हमारी सरकार ने पिछले अनेक दशकों से मापने पद्धति को (लम्बाई–वजन आदि)–अमेरिका में आज भी इस दशक लड़ पद्धति को पूरी तरह अनदेखा कर अनिवार्य नही है और व्यवहार में उपयोग करने की बात जनता की स्वेच्छा चारिता पर छोड़ दी है। भारत के संविधान के संशोधित निर्देशों के अनुसार, क्या आप जानते हैं कि यह जरूरी है–

❖ धनादेश (मनीआर्डर) पर सौर दिनांक लिखा रहने पर कोई भी बैंक उसके भुगतान को नकार नही सकती। ऐसा दिनांक लिखना कानूनी तौर पर स्वीकार किया गया है।

❖ वर्तमान में उपयोग में लार्ड ईसाई काल गणना काल के विशाल दायरे को एक व्यक्ति के साथ जोड़ती है–ईसामसीह। इसका ऋतु परिवर्तन या प्राकृतिक बदलाव से कोई भी सम्बन्ध नही है।

❖ भारत की पारम्परिक काल गणना की कलाओं पर आधारित है। इसमें तिथि की रचना कृष्ण–पक्ष व चन्द्र शुक्ल पक्ष के आधार पर की गई है। इसे चन्द्रमास और सौरमास काल गणना भी कहते है। सौर काल गणना सूर्य के भ्रमण पर आधारित है। इसलिए इसे सौर काल गणना कहते हैं।

❖ चन्द्र मास और सौर मास काल गणना के महीनों के नाम समान ही हैं, यथा चैत्र, वैशाख आदि। लेकिन दोनों वर्षो के आरंभ दिन अलग–अलग होते हैं। सौर गणना में वसन्त–संपात दिवस से वर्ष का आरंभ होता है, जबकि चंद्र–गणना में चैत्र–प्रतिपदा।

❖ सौर गणना में वैशाख से लेकर भाद्र पद तक सभी मास ३१ दिन के और अन्य सभी मास ३० दिन के होते हैं। चैत्र चार वर्षो में एक बार ३१ दिन का होता है। चंद्र गणना में सभी मास ३० दिन के होते है। चंद्रमास में इसीलिए अधिक मास भी अनिवार्य रूप से आता है। 'ग्रेगेरियन गणना) में तो परिश्रम से मास के दिन याद रखना पड़ते हैं।

❖ धार्मिक कार्यो के लिए चन्द्र गणना या सौरगणना के उपयोग करने पर सरकार को कोई आपत्ति नही है। इसीलिए सौर गणना के उपयोग से हम 'ग्रेगेरियन गणना' को ही, जो अप्राकृतिक है तिलांजलि देंगे।

❖ सौर गणना ऋतुओं से जुड़ी है। चन्द्र गणना का ऋतुओं से सम्बन्ध दूरस्थ है। इसी कारण मकर संक्रान्ति का दिन धीरे धीरे आगे जा रहा है। कुछ (हजार) वर्षो में यह गर्मियों में आना शुरू होगा। और कुछ (हजार वर्षों) में यह वर्षाकाल में आने लगेगा। प्रारंभ में मकर संक्रान्ति का दिन या उत्तरायन का दिन सौर मास की तरह ही १४ जनवरी से लगभग २०/२१ दिन पहले आता था। लेकिन जब उसका प्रत्यक्ष उत्तरायन से कोई सम्बन्ध नहीं रहा है शासकीय सौर गणना चार प्रमुख भूगोल शास्त्रीय घटनाओं पर आधारित है– वसन्त–संपात, दक्षिणायन, शरद–संपात और उत्तरायण! वसन्त–सम्पात दिन ही और चैत्र प्रतिपदा होता है। दक्षिणायन दिन सौर–आसाढ़ प्रतिपदा होता है। शरद–संपात दिन सौर आश्विन प्रतिपदा और उत्तरायन यानी सौर पौष प्रतिपदा होता है। 'ग्रेगेरियन ईस्वी सन्' पद्धति का खगोल–शास्त्रीय घटनाओं कोई सम्बंध नही है। वाराहमिहिर से भी पूर्व ईसा की कई शताब्दियों से पहले भारत में पतंजलि यात्रवल्क आदि की संहिताओं में भारतीयों को यह ज्ञान भलीभांति था। हम सौर गणना को व्यापक व्यवहार में संवैधानिक आधारों पर कैसे व्यापक व्यवहार में लाएं और अपनी समग्रहीन भावना से छुटकारा कैस पायें यह आज का ज्वलन्त प्रश्न हैं–

❖ सौर गणना के वैज्ञानिक विचार के पीछे एक सामूहिक मनोबल व शक्ति अनिवार्य है। सिर्फ इतिहास के सत्य और वैज्ञानिक प्रामाणिकता के साथ ही हम आग्रहपूर्वक सौर गणना को प्रचारित कर सकते है। शासकीय समानतासिर्फ अंग्रेजी भक्तों के प्रच्छन्न राष्ट्रद्रोह के कंधों पर नही ढोयी जा सकती है आज पत्र व्यवहार ईस्वी दिनांक लिखिए पर सौर प्रणाली का सरकारी दिनांक दिखाने वाली दिन दर्शिका, सौर गणना का दिनांक भी सुनिश्चित करें अनेक क्षेत्रीय महत्व के संवतों को चाहे वे महर्षि दयानन्द, जैनधर्म प्रवर्तक महावीर स्वामी, सिख गुरुओं व उनके प्रर्वतकों अथवा शक या शांतिवाहन या महाराजा रणजीत सिंह आदि के सिंहासन से हजों से सम्बन्धित हों, पर कम से लोकप्रतिनिधियों या बुद्धिजीवियों को अपनी आदत बदलने का दबाव डालें है। "सरकारी व संवैधानिक" आदेशों के लकीर के फकीरों को हर अवसर पर याद दिलाएं। आयकर विभाग भी इसी वर्ष से वित्तीय वर्ष में परिवर्तन क्यों नहीं कर सकता है जब वित्तमंत्रालय, रिजर्वबैंक, स्टेटबैंक इस विषय में आधिकारिक निर्देश परिपत्रों द्वारा जारी कर चुका है।

❖ एक बार इस मुद्दे पर आयकर विभाग और शासन अडिग हो जाएगा तो सभी अनिवार्य रूप से इसका अभ्यास कर सकेंगे और तभी जनता का इसे कार्यान्वित करने की समर्थन मिलेगा।

❖ अपने से प्रश्न पूछ कर देखें और पायेंगे सन् २०१८ में दिनांक दिसम्बर २२ उत्तरायण का दिन है, १४ जनवरी नहीं। प्रत्यक्ष उत्तरायण दिन १४ जनवरी भी हटता हुआ फरवरी, मार्च इस तरह आगे बढ़ता शेष पृष्ठ 11 पर

लोकतंत्र में शरई अदालतों का क्या काम?

नाइश हसन

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने हाल में न केवल यह कहा कि मुसलमान अपने मामले शरई अदालतों में निपटाएँ, बल्कि यह भी ऐलान किया कि वह कुछ और ऐसी ही अदालतें खोलेगा। यह ऐलान ऐसे समय किया गया, जब निकाह, हलाला का मामला चर्चा में है। जब–जब मुसलमान औरतों ने मजहबी सत्ता की जड़ों को हिलाने की कोशिश की है, तब–तब ऐसी ही कोशिशें हुई हैं। याद करें कि अतीत में जब शाहबानों, इमराना, गुड़िया फिर शायरा बानो के मामले सामने आये तब शरीयत के हिसाब से चलने या फिर शरई अदालतें गठित करने अथवा उन्हें महत्त्व देने की पहल हुई। ऐसा जान पड़ता है कि नियंत्रण से बाहर होते गुलामों को फिर से नये हथियारों से साधा जा रहा है ताकि वे भागने न पायें। देश के कई शहरों में दारुल कजा कही जाने वाली शरई अदालतें स्थापित की जा चुकी है। इन अदालतों ने कई मामलों में तीन तलाक को जायज ठहराते हुए फैसले दिये हैं। इसके सुबूत भी मौजूद हैं। खुला (पति से अलग होने का हक) लेने वाली औरतों को उनके सारे अधिकारों से वंचित करने वाले फैसले भी इन अदालतों ने दिये हैं। आज यह कहीं जरूरी है कि औरतों के सवाल को मानवाधिकार के प्रश्न के रूप में खड़ा किया जाये, न कि धर्मों के दायरे में। चूँकि भारत कोई इस्लामिक देश नहीं इसलिए धर्म आधारित अदालतें खड़ी करना अच्छे संकेत नहीं। शरई अदालतें एक शोषणकारी व्यवस्था की पैरोकारी से ज्यादा कुछ नहीं। भारत जैसे लोकतान्त्रिक और पन्थनिरपेक्ष देश में जहाँ अलग–अलग धर्मों, संस्कृतियों के लोग रहते हों, जहाँ आस्था की आजादी हो और जहाँ सबके निजी कानून भी हैं वहाँ जरूरत इसकी है कि इन निजी कानूनों में सुधार लाया जाये और उन्हें लैंगिक समानता के आधार पर बनाया जाये।

मुस्लिम महिलाएँ तो यह चाहती हैं कि उन्हें समाज के हवाले न किया जाये, बल्कि उन्हें भारतीय संविधान के तहत गठित अदालतों से ही न्याय मिले। इन अदालतों में संतुष्ट न होने पर ऊँची अदालतों में अपील की गुंजाइश बनी रहती है; परन्तु दारुल कजा के फैसलों की कोई अपील नहीं होती। दारुल कजा के फैसलों से दो–चार महिलाओं की दास्तान यह साफ कर देती हैं कि कैसे वो

उनके हक में नहीं हैं। रेशमा नामक एक महिला इसलिए दारुल कजा गयी, क्योंकि वह खुला चाहती थी। उसने वहाँ बताया कि पति बहुत मारपीट करता है इसलिए घरेलू हिंसा का केस कोर्ट में है; लेकिन मैं यहाँ खुला चाहती हूँ। जवाब मिला, पहले आप वह केस उठाइये और हमें उससे सम्बन्धित कागत दीजिये। रेशमा का कहना था कि दारुल कजा का सिस्टम ठीक नहीं। वहाँ बैठे लोग जैसे–तैसे औरत को मर्द के घर भेज देना चाहते हैं। औरत का पक्ष बिल्कुल भी नहीं समझते। वे कुरान की रोशनी में नहीं, पितृसत्ता की रोशनी में फैसाले सुनाते हैं। याद रहे तीन तलाक मसले पर पर्सनल लॉ बोर्ड की ओर से उच्चतम न्यायालय में औरतों को कमअक्ल बताया गया था।

२००५–२००६ में लखनऊ स्थित महिला संगठन तहरीक ने एक सर्वे कराया था, जिसमें मध्य एवं निम्न वर्ग के लगभग ३५०० मुस्जिम पुरुष और महिलाओं से बात की गयी थी। इसमें एक सवाल यह पूछा गया था कि आप अपने किसी पारिवारिक विवाद के निपटारे के लिए कहाँ जाना पसन्द करेंगे। जवाब में ७६ प्रतिशत ने पुलिस और न्यायालय जाने की बात कही थी। जब यह पूछा गया कि क्या आपने दारुल कजा का नाम सुना है, जो केवल एक फीसद लोगों ने हाँ में जवाब दिया था। क्या आप ने पर्सनल लॉ बोर्ड का नाम सुना है? इस सवाल पर हाँ कहने वाले लोगों का फीसद महज दो था। इस सर्वेक्षण में एक सवाल यह भी था कि क्या आप जानते हैं कि मसलक क्या होता है? इस पर सिर्फ पाँच फीसद लोगों ने हाँ कहा था। जाहिर है कि दारुल कजा यानी शरई अदालतें लोगों की प्राथमिकता में नहीं हैं। आखिर जब इस तरह की अदालतों की माँग आम जनता ने नहीं की और जब किसी ने सरकार से यह अपील भी नहीं की कि हमारे न्यायिक हक की सुरक्षा के लिए किसी धार्मिक संगठन को जिम्मेदार बनाया जाये, तब फिर शरई अदालतों के गठन का क्या मतबल? चूँकि सरकारों और राजनीतिक दलों ने वोट की सियासत साधने के लिए इस प्रकार के संगठनों को फलने–फूलने दिया इसलिए लोकतन्त्र में हाशिये की आवाज का दम घुटता रहा। यह किसी से छिपा नहीं कि जमीयतुल उलमा ए हिन्द, तबलीगी जमात, आला हजरत, मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड जैसी तंजीमों से संसद और न्यायपालिका में भी औरतों के सवाल पर तल्ख जुबानी की है। शरई अदालतों की जरूरत इसलिए नहीं; क्योंकि देश और दुनिया में शरीयत कानून एक से नहीं हैं। शरीयत में शिया–सुन्नी के कानून भी अलग हैं। एक लोकतान्त्रिक देश में जबरदस्ती इस तरह का माहौल बनाना जिससे आम मुसलमान को भ्रमित किया जा सके, चिन्ताजनक है। यदि कल हिन्दू, ईसाई, पारसी आदि भी अपने शेष पृष्ठ 11 पर

इंटरनेट पर १ मिनट में क्या-क्या होता है?

आजकल हम सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति की दुनियाँ में रह रहे हैं। अब दुनियाँ के प्रत्येक क्षेत्र की जानकारी केवल एक छोटे लेकिन स्मार्ट मोबाइल फोन की मदद से हासिल की जा सकती है। दुनियाँ की कुल आबादी २०१७ में ७.४७ बिलियन तक पहुँच गई और ३.७७ बिलियन लोगों तक इंटरनेट की पहुँच हो गयी है। आज की दुनिया में ४.६ बिलियन मोबाइल फोन हैं। यह आलेख एक मिनट में इंटरनेट पर हुई गतिविधियों पर आधारित है। इस लेख में केवल सितम्बर २०१७ तक अपडेटेड आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। आइये जांनते हैं कि इन्टरनेट की दुनिया में १ मिनट में क्या–क्या गतिविधियाँ होती हैं?

१. फेसबुक पर एक मिनट में ६०,००० लोग लॉगिन करते हैं
२. वॉट्सअप पर हर मिनट १६ मिलियन टेक्स्ट मेसेज भेजे जाते हैं।
३. प्रत्येक मिनट में यूटयूब पर ४.१ मिलियन वीडियो देखे भेजे जाते हैं।
४. एक मिनट में गूगल प्ले स्टोर के माध्यम से ३.४२ लाख एप्लिकेशन डाउनलोड किए जाते हैं।
५. हर मिनट इन्स्टाग्राम पर ४३००० पोस्ट अपलोड किए जाते हैं।
६. ट्विटर हर मिनट ४.५२ लाख ट्वीट्स किए जाते है।
७. टिन्डर पर एक मिनट में ६.६० लाख स्वीप भेजे जाते हैं।
८. हर मिनट में विभिन्न डोमेन के माध्यम से १५६ मिलियन ईमेल भेजे जाते हैं।
९. लिंक्ड–इन पर हर मिनट में १२० नये अकाउंट बनाए जाते हैं।
१०. मेसेंजर के माध्यम से हर मिनट १५,००० जीआईएफ भेजे जाते हैं।
११. एक मिनट में ऑनलाइन शॉपिंग पर $ ७५,१५२२ खर्च कर दिया जाता है।
१२. गूगल पर एक मिनट में ३५ लाख प्रश्न पूछ जाते हैं
१३. इन्टरनेट पर हर मिनट में १८ लाख तस्वीरें अपलोड की जाती हैं।

आइये उपरोक्त आंकड़ों की तरह, फेसबुक पर एक मिनट में होने वाली गतिविधियों पर नजर डालें: फेसबुक के १ मिनट में

❖ औसतन १ लाख फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी जाती हैं। ❖ औसतन २.४३ तस्वीरे अपलोड की जाती हैं। ❖ औसतन १३,८८८ एप्लीकेशन अपलोड किये जाते हैं। ❖ औसतन ३३ पोस्ट्स शेयर किये जाते हैं। ❖ औसतन ५० हजार लिंक्स पोस्ट किये जाते हैं। ❖ लगभग १.५२ करोड़ पोस्ट लाइक किये जाते है।

उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर आप यह अनुमान निकाल सकते हैं कि इन्टरनेट और सोशल मीडिया कितनी तेजी से अपना विस्तार कर रहा है।

मैं अंकोरवाट बोल रहा हूँ

✍ डॉ. पवनपुत्र बादल

अपनी अतुलनीय सांस्कृतिक विरासत के भग्नावशेष को एक लम्बे कालखण्ड से सहेजे निमेष बाट जोहता रहा कि कब मेरे अपने मेरी सुधि लेंगे। कम्बोडिया (वर्तमान कम्पयूचिया) में स्थित मैं अंकोरवाट कई बार अवसान और उत्थान के दौर से गुजरा हूं। अनेकानेक वर्षों तक मेरा वैभव विश्वफलक पर स्थापित रहा। अपने खोये हुए सांस्कृतिक तथा साहित्यिक वैभव को प्राप्त करने की लालसा लिये, मेरे पास आकर कि कोई मुझे जान–समझकर, मेरे विषय में विश्व को बताये। अतः भारतीय संस्कृति व साहित्य की संरक्षक संस्था अखिल भारतीय साहित्य परिषद् से अनुरोध किया और मेरी इच्छा का सम्मान रखते हुए साहित्य परिषद ने अपने ख्यातिलब्ध चौदह साहित्व साधक और सर्जकों को मेरी सुधि लेने के लिए भेजा। श्री श्रीधर पराड़कर जी के मार्गदर्शन में प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल, डॉ. श्रीराम परिहार, डॉ. सुशीलचन्द्र त्रिवेदी मधुपेश, श्री ऋषि कुमार मिश्र, डॉ. ऊषा उपाध्याय डॉ. भरत ठाकोर, श्रीमती साधनां बलवटे, डॉ. भवानी जी, प्रो. नीलम राठी, श्री महिपाल सिंह, श्री विष्णु तिवारी, श्री विपिन जी और डॉ. पवनपुत्र बादल जी ने मेरे आमंत्रण का मान रखा। साहित्य सर्जना के ये चौदह साधक मुझे उपकृत करने हेतु तत्पर हो गये।

स्वर्णभूमि एयरपोर्ट बैंकाक पर स्थापित देवासुर समुद्र मन्थन की प्रतिकृति मूर्त रूप में देखकर सभी को अपने आगमन के उद्देश्य के प्रति बल मिला। ऊर्जा को समेटे सभी साधक आगामी एक सप्ताह तक मेरा अनुसंधान तथा पुनरीक्षण करने के कार्य में उत्साहित होकर संलग्न रहे।

मैं आपको अपनी कहानी सुनाता हूं। पुराणों में मुझे कम्बुजदेश, यशोधंरपुर और कम्बुल के नाम से पुकारा गया हैं वर्तमान देश कम्बोडिया के प्रमुख शहर के रूप में स्थापित मेरे अस्तित्व के विषय पर विभिन्न मत मिलते हैं। एक अनुश्रुति के अनुसार कौण्डिन्य नाम के ब्राह्मण ने मीकांग नदी के तट पर सिमरिप शहर में मेरी स्थापना की थी। कुछ का मानना है कि जब नवीं शताब्दी (८६० ई.) में जयवर्मा तृतीय ने कम्बुल पर शासन प्रारम्भ किया, तब उसने अपनी राजधनी के रूप में अंग्कोरथोम (अर्थात् अंग्कोर की राजधनी) की नींव डाली। निर्माण का कार्य लगभग चालीस वर्षों में पूर्ण हुआ तथा ६०० ई. में मैं पूर्णतया एवं वैभव को प्राप्त हुआ।

ऐतिहासिक तथ्य इंगित करते है कि ख्मेर शासक सूर्यवर्मन द्वितीय (१११२–११५३ ई.) ने मुझे मेरा स्वरूप प्रदान किया। तेरहवीं शताब्दी के एक चीनी यात्री के

अनुसार मेरा निर्माण एक ही रात में किसी अलौकिक सत्ता द्वारा करवा दिया गया। रात्रि मं जहां विशाल चारागाह तथा नदी का तट होता था, अगली ही प्रातः वहां विशालकाय प्रांगण में निर्मित मंदिर अपनी स्थापत्य कला की भव्यता का प्रदर्शन करते खड़े थे। निर्माण के पीछे के उद्देश्यों पर भी विभिन्न प्रकार की कथाएं लोक में प्रचलित हैं जिनके विषय में आगे चर्चा करूंगा।

आइये आपका परिचय अपने विस्तार और अपने निर्माण से कराता हूं। मेरी निर्मिति १६२.६ हेक्टेयर क्षेत्रफल (लगभग चार वर्ग मील) में हुई है। कई योजना में विस्तीर्ण मेरे प्रांगण में प्रवेश करने से पूर्व सुरक्षा की कई सीमाएं हैं। आज मैं एक विशाल नगर के खण्डहर के रूप में दिखता हूं, जिसके चारों ओर रक्षा के उद्देश्य से लगभग ७०० फुट की खाई है, जो जल से पूर्ण रहती है। दूर से देखने पर खाई किसी झील की भांति दृष्टिगत होती है। नगर ओर खाई के बीच एक विशाल वर्गाकार प्रचीर नगर की सुरक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से बनायी गयी दिखती है। इस प्राचीर में अनेक भव्य और विशाल महाद्वार बने हैं। महाद्वारों के ऊंचे शिखरों को त्रिशीर्ष दिग्गज अपने मस्तक पर उठाये खड़े दिखते हैं। विभिन्न द्वारों से पांच विभिन्न राजपथ मेरे मध्य तक पहुंचते है। विभिन्न आकृतियों वाले सरोवरों के खण्डहर अपनी जीर्णावस्था में भी निर्माणकर्ताओं का यशोगान करने के लिए सक्षम है। मेरे बीचो–बीच एक विशाल शिव मन्दिर हैं जिसके तीन भाग है। प्रत्येक भाग में एक ऊंचा शिखर है। मध्य शिखर लगभग १५० फुट ऊंचा हैं इस ऊंचे शिखर के चारों ओर अनेक छोटे–छोटे शिखर हैं, जिनकी संख्या लगभग ५० है। इन शिखरों के चारों ओर समाधिस्थ शिव की मूर्तियां स्थापित हैं। मूलातः मैं भगवान् शिव को समर्पित हुआ करता था, जहां कालान्तर में १२वीं सदी में सूर्यवर्मन द्वितीय द्वारा एक विशाल विष्णु मंदिर बनवाये जाने के पश्चात् सम्पूर्ण विश्व में विष्णु मंदिर के रूप में विख्यात हुआ। मेरे विष्णु मंदिर तक पहुंचने के लिए खाई को पार करने के उद्देश्य से एक पत्थर का पुल बना हुआ है, जिसके पार प्रवेश हेतु १००० फीट चौड़ा विशाल प्रवेश द्वार है। प्रवेश द्वार से आगे चलने पर सीढ़ियाँ चढ़कर आप उस चबूतरे तक पहुंचते हैं जिस पर इस विशालकाय निर्मित के दर्शन होते है। इसकी स्थापना के मूल में अनेकानेक कहानियाँ हैं। कहा जाता है कि स्वयं देवराज इन्द्र ने अपने बेटे के लिए महल के रूप में हमारा निर्माण एक रात में ही कराया था, जिसका उल्लेख चीनी यात्री ने अपने संस्मरण में किया है।

एक लोकोक्ति के अनुसार ख्मेर शासक सूर्यवर्मन द्वितीय हिन्दू देवी–देवताओं के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पण कर अमर होना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने अपने लिए एक विशिष्ट पूजन–स्थल बनवाया जहां वह ब्रह्मा, विष्णु ओर महेश तीनों की ही पूरा करते थे। यह मेरी विशेषता है कि मैं विश्व का एक मात्र ऐसा स्थान हूं जहां पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों प्रमुख सनातन देवताओं की विशालकाय प्रतिमाए एक साथ मिलती है। विश्व का सबसे विशाल विष्णु मंदिर होने का गौरव भी मुझे ही प्राप्त है। अपने अमरत्व की आकांक्षा में मेरी निर्मिति की गयी।

मेरी मुख्य पहचान एक नगर की न होकर प्रख्यात विश्णु मंदिर के रूप में हो गयी। आहलाद का विषय यह भी है कि मेरे किसी एक अंग द्वारा मेरी समग्र पहचान हो। आइये अब आपको मंदिर के विषय में भी कुछ बताता चलूं।

मेरी स्थापत्य कला में आपको खमेर तथा चोल शैली की वास्तु कला का बोध होगा। ऐसा सम्भवतः इस कारण से है कि निर्मिति काल में शासक के परामर्शदाता दक्षिण भारतवासी रहे। तभी कतिपय लोग इसे तमिल मूल से भी जोड़ लेते हैं। मंदिर की दीवारों पर आपको सम्पूर्ण रामायण मूर्त रूप में दिखती है।

मेरे विशालकाय परिसर के परिवृत्त मनोरम दृश्य तथा प्रकृतिक सौनदर्य किसी को भी मेरे अन्दर आकर मुझे निहारने को विवश कर देते हैं। जिसकी भी दृष्टि मुझ पर पड़ी, आश्चर्य से उसका मुख खुला और नेत्र विस्फारित रह गये। सराहनाओं की झड़ी लग जाती हैं ऐसा हो भी क्यों नहीं! पूरे परिसर में सम्पूर्ण रामाण का चित्रात्मक स्वरूप मेरी भित्तियों तथा शिलाओं पर प्रापत हो जाता है। कहीं शेषशायी विष्णु की सेवा में लीन माँ लक्ष्मी की जलधरा द्वारा चरण वन्दना दिखती है, कहीं विशालकाय मगर।

भगवान विष्णु के दशावतारों का शिलाओं पर निरूपम भारतीय मूल से मेरी संलग्नता का स्पष्ट परिचायक है। मूर्त रूप में रावण द्वारा कैलासपति शिव के पास जाकर उनसे कैलास मांगने का दृश्य, आशुतोष शिव द्वारा उसे वरदान देना, कामदेव द्वारा वाण चलाना, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कंस के वध का दृश्य, भगवान, नरसिंह द्वारा हिरण्यकश्यप को अपनी जंघा पर लिटाकर अपने नखों द्वारा उसका उदर चीर कर वध करने का दृश्य आदि ऐसे दिखते है कि वास्तव में व्यक्ति दैव–सामीप्य का अनुभव कर उनकी लीलाओं का दर्शन करने में मग्न हो जाता है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म कलाओं का प्रस्तरण खण्डों पर प्रदर्शन मेरा वैशिष्ट्य है। केवल रामायण ही नहीं, अपितु महाभारत के भी कुछ दृश्य दीवारों पर अंकित है।। इन सबके साथ–साथ कतिपय स्थानों पर बौद्ध धर्म से संबंधित चित्र भी प्रदर्शित हैं। ऐसा होने का भी कारण है।

पैराणिक मान्यताओं के अनुसार कुल २७ शासकों ने कम्बुजदेश पर शासक किया। इनमें से कुछ हिन्दू तथा कुछ बौद्ध धर्म के अनुयायी रहे हैं। शासक जिस धर्म का भी अनुयायी होता है, स्वाभविक ही उस राज्य की संस्कृति, साहित्य व स्थापत्य पर उस धर्मविशेष का उस काल खण्ड में प्रभाव पड़ता है और मेरे ऊपर दिखने वाला बौद्ध प्रभाव भी इसी सनातन गाथा का अंश है।

भारतवर्ष में बौद्ध धर्म के उदय तथा उसके प्रचार–प्रसार का प्रभाव कम्बुजदेश पर भी पड़ा। बौद्ध धर्म की महायान शाखा के देवता अवलोकितेश्वर की पूजा भी यहीं प्रचुरता तथा विधि–'विधान से की जाने लगी। इसे कालान्तर में बौद्धधर्म के थेरवाद काक संरक्षण प्राप्त हुआ। १५वीं सदी से १६वीं सदी तक थेरवाद अनुयायी बौद्ध साधुओं ने मेरी देखभाल की और इस दौरान हुए कई आक्रमणो से मुझे बचाया। सम्भवतः इसी कारण मुझे बहुत अधिक क्षति नहीं पहुंची। मेरे पश्चिम के सीमावर्ती थाई जनसमूह पूर्व काल में कम्बुज के ही अधीन थे। १४वीं शताब्दी के मध्य में वे आक्रामक हो उठे और उन्होंने मुझे बार–बार जीता और लूटा। बस मेरी स्थापत्य की विरासत को ही अध्कि क्षतिग्रस्त न करना उनका एक उपकार रहा, अन्यथा मैं आज आपको कुछ बताने की स्थिति में न होता। ठीक वैसे ही जैसे कि भारतवर्ष की स्थापत्य कला के कई विख्यात निर्माणों का विध्वंस तत्कालीन लुटेरे शासकों ने किया।

निरन्तर हो रहे आक्रमणों से लाचार ख्मेरों ने राजधानी का परित्याग कर दिया। धीरे–धीरे बाँस के शेष पृष्ठ 10 पर

सम्पूर्णता का पर्याय ओम्

✍ हृदयनारायण दीक्षित

ओ३म् रहस्य है। भारत की निर्विवाद आस्था। प्राचीन परम्परा ने ओ३म् को अनवरत आदर दिया है। ओ३म् की प्रतिष्ठा वैदिक परम्परा है। ओ३म् का व्यवहार तानिक, शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन और सिख आदि सभी जीवन पद्धतियों ने स्वीकारा है। विद्वान इसे अ उ तथा म् का योग बताते हैं; लेकिन यह अ उ तथा म् का योग ही नहीं है। ऊँ ध्वनि बीज है, इसका उच्चारण अ उ और म् तक फैलता है। पाणिनी ने ओम को अव्यय बताया है। अव्यय का अर्थ है सदा रहने वाला, कभी भी नष्ट न होने वाला अविनाशी। गोपथ ब्राह्मण की १६ वीं कण्डिका से ३० वीं तक ओम् का विश्लेषण है। बताते हैं "ओ३म् ऋग्वेद में ऋचा है। सामवेद में गीत (साम) है। यजुर्वेद में यजुष है। ब्राह्मणों (ग्रंथों) में ब्राह्मण (ज्ञान) है, सूत्रों में सूत्र है। श्लोकों में श्लोक है। प्रणव में प्रणव है।" (१.१.२३) उत्तरवैदिक काल में भी ओम् की सर्वव्यापी महत्ता थी। ओ३म् को परमात्मा का नाम भी बताया गया है। किसी वस्तु/व्यक्ति की अलग पहचान की खातिर नाम रखे जाते हैं। परम सत्ता अखण्ड और पूर्ण है। मूलभूत प्रश्न है कि क्या उसका भी नाम हो सकता है? ओ३म् के सारे अर्थ सीमा हैं। ओ३म् भारतीय चिन्तन में सीमातीत और अर्थातीत है।

ऋग्वेद में भी ओ३म् इसका उल्लेख है। स्पष्ट है कि ऋग्वेद की रचना के पहले ही ओ३म् ध्वनि की शक्ति और महत्ता को पहचाना जा चुका था। पतंजलि योगसूत्र में **''तस्य वाचक प्रणवः''** के रूप में ओ३म् है। कठोपनिषद् (१.२.१५) में कहते हैं "वेदों में जिसकी प्रतिष्ठा है जो सभी तपों का लक्ष्य है, वह पद– 'ऊँ इत्येतत्' है। गीता में ओ३म् की महिमा का उल्लेख कई बार हुआ। अध्याय ७ (श्लोक८) में कृष्ण ने स्वयं को **'प्रणवः सर्ववेदेषु'** सभी वेदों में प्रणव–ओ३म् बताया। अध्याय ८ के १३ वें श्लोक में कहा 'ओम एक अक्षर है। यह ब्रह्म है। इसका स्मरण करते हुए शरीर त्यागने वाले लोग परम गति पाते हैं।" डॉ. राधाकृष्णन के गीता अनुवाद में टिप्पणी है "ओ३म् शब्द ब्रह्म का प्रतीक है जिसे अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।" (भगवद्गीताः डॉ० राधाकृष्णन पृष्ठ २११) ओ३म् अव्याख्येय है। अनिर्वचनीय है, इसका निर्वचन नहीं हो सकता। भाषा की सीमा है। क्या ओ३म् सम्पूर्णता का आच्छादन नहीं है? कठोपनिषद् प्राचीन उपनिषद् है। इसमें (१.२.१४) नचिकेता ने यम से कहा, "धर्म और अधर्म के सम्बन्ध से रहित, कार्यकारण रूप, प्रकृति से पृथक् तथा भूत, वर्तमान और भविष्य से भिन जिस 'परमात्म तत्त्व' को को आप जानते हैं, वही मुझे बताइए।" प्रश्न भौतिकवादी है और शुद्ध असाम्प्रदायिक है। ओ३म् परमतत्त्व है। यमराज कहते हैं "जो सभी वेदों द्वारा प्रतिपादित है, तप ब्रह्मचर्य आदि साधनों का चरम लक्ष्य है, वह संक्षेप में ओ३म् है।" यह अक्षर ही ब्रह्म है। यह अक्षर ही 'परम' है–'एतद्ध्येवाक्षरं परम्– यह परम आलम्बन है।" (वही १.२.१४–१६) ओ३म् में सृष्टि की समस्त ऊर्जा एक ही स्थान, एक अक्षर ध्वनिरूप में बीज बनती है। आराधना के प्रारम्भ में यह आराधक का आश्रय है। आराधना की परिपूर्णता में यह ब्रह्म (परम) है। उपनिषद् के ऋषियों में वैचारिक भिन्नता थी। आश्चर्य है कि ओ३म् को लेकर ऋग्वेद से उपनिषद् और महाकाव्यों तक सबकी सहमति एक जैसी है।

वैदिक काल से उत्तर वैदिक काल तक के साहित्य में 'ओ३म्' की महत्त्वपूर्ण चर्चा है। प्रश्नोपनिषद् (५.१) के अनुसार सत्यकाम ने ऋषि पिप्पलाद से पूछा, "जो जीवन में ओंकार का ध्यान करते हैं, वे इस ध्यान के आधार पर किस लोक को प्राप्त करते हैं?" यहाँ सीधी सांसारिक इच्छा है। ओंकार से होने वाले लाभ की बात पूछी गयी है। पिप्पलाद ने बताया, "ओंकार परम ब्रह्म है, यही अपर ब्रह्म भी है। इसे जानने वाले इसी एक अवलम्ब से अपनी इच्छा के अनुसार अपर ब्रह्म या परब्रह्म में किसी एक का अनुसरण करते हैं।" (वही ५.२) ब्रह्म संपूर्णता का पर्याय है। यहाँ दो ब्रह्म हैं। संपूर्णता दो नहीं होती। पूर्ण में पूर्ण घटाओं तो पूर्ण ही बचता है। अपर ब्रह्म व्यक्त संपूर्णता है और परम ब्रह्म व्यक्त–अव्यक्त सर्वस्व है। फिर ओंकार की मात्राओं का विवेचन करते हैं। ओ३म् में ३ मात्राएँ हैं– अ, उ और म। पहली मात्रा 'अ' है। पिप्पलाद बताते हैं "एक मात्रा से ध्यान करने वाले को ऋग्वेद की ऋचाएँ (मंत्र) मनुष्य लोक देती हैं। यहाँ वह तप, ब्रह्मचर्य व श्रद्धा से सम्पन्न होता है और महिमा का अनुभव करता है।" (वही ५.३) यहाँ 'महिमा का अनुभव' महत्त्वपूर्ण है। महिमा का अर्थ स्वयं का परिपूर्ण साक्षात्। ओंकार की पहली मात्रा ऋग्वेद की अन्तर्वस्तु का ज्ञान कराती है। इसी ज्ञान से महिमा का बोध होता है। ओ३म् का ध्यान व्यक्तित्व का रूपांतरण करता है। पिप्पलाद ने ओ३म् की दो मात्राओं के ध्यान का अलग परिणाम बताया है, "व्यक्ति दो मात्राओं से ओ३म् का ध्यान करता है तब वह चन्द्रलोक पाता है। तब यजुर्वेद के मंत्र उसे चन्द्रलोक पहुँचाते हैं। चन्द्रलोक का आनंद भोगकर उसका फिर से

शेष पृष्ठ 11 पर

सांख्य योग की उपयोगिता

✍ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

महाभारत युद्ध के प्रारम्भ से पूर्व एक दूसरे के समक्ष सन्नद्ध खड़ी सेनाओं में कौरव पक्ष में खड़े बंधु–बांधवों, सगे–सबंधियों, गुरुजनों, मित्रों को देखकर अर्जुन के मन में उत्पन्न विषाद को देखकर योगेश्वर कृष्ण ने कालजयी गीता ज्ञान अर्जुन के संशय रूपी विषाद को दूर करने के लिए दिया। अर्जुन के मन में अपने सगे–संबंधियों की निकट भविष्य में होने वाली मृत्यु और युद्ध में उनको मारने पर अधर्म और इस कारण अपने कर्तव्य कर्म क्षत्रिय धर्म के निर्वहन को छोड़कर अर्जुन का झुकाव कर्म सन्यास की तरफ हो गया था।

अर्जुन के इसी संशय रूपी विषाद को दूर करने के लिए योगेश्वर कृष्ण ने जन्म–मृत्यु, नित्य–अनित्य, आत्मा–परमात्मा संबंधी ज्ञान अर्जुन को दिया जिससे वह इस सत्य ज्ञान के आलोक में अपने भ्रम को दूर कर सके। योगेश्वर कृष्ण ने सांख्य योग के अन्तर्गत वेद आधारित गीता ज्ञान द्वारा अर्जुन, के उठाए सभी प्रश्नों के उत्तर दिए जिससे वह कर्म संन्यास के अकर्मा दस्यु बनने के मार्ग को छोड़ कर अपने कर्तव्य कर्म क्षत्रिय धर्म निर्वहन करते हुए बुराइयों के प्रतीक कौरवों को युद्ध में मार कर, पराजित कर सके और धर्म की स्थापना कर सके। सांख्य अर्थात् ज्ञान योग इस वैदिक गीता ज्ञान में कर्म एवं भक्ति योग से पूर्व आता है। इस क्रम का अपना महत्त्व है और एक अत्यंत सुंदर संदेश देता है। किसी भी कार्यक्रम के स्वतंत्र कर्ता के रूप में संपादन से पूर्व हमें उसके कारण क्रिया फल का संपूर्ण सत्य ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम किसी कार्य के कारण क्रिया फल का सत्य बोध किए बिना कर्म करेंगे तो निश्चित रूप से उसके संपादन में त्रुटि होने की संभावना अधिक होगी। इसलिए योगेश्वर कृष्ण ने कर्म योग से पूर्व ज्ञान व सांख्य योग का ज्ञान विषाद में फँसे अर्जुन को दिया। इस सांख्य योग ज्ञान का महत्त्व वर्तमान समय में पाखंडों, अंधविश्वासों के भवर के विषाद में आज का अर्जुन बने मनुष्य के लिए अत्यधिक बढ़ जाता है। सांख्य योग जीवन के दोराहे पर असमंजय में फँसे मनुष्य को 'योग' और 'भोग' के दो रास्तों में से एक ही रास्ता 'योग मार्ग' चुनने की प्रेरणा देता है। इसका महत्व इसलिए और अधिक बढ़ जाता है कि गलत मार्ग पर चलने से हम अपने जीवन के उद्देश्य से दूर हो जाते हैं। जीवन का उद्देश्य अर्थात् जन्मजाल के बंधन से छूट कर मोक्ष की प्राप्ति और मोक्ष की अवस्था में उस समय चेतन आनन्द स्वरूप परमात्मा के आनन्द में निमग्न रहने की प्राप्ति है।

जीवन के दोराहे पर संशय रूपी विषाद में खड़ा मनुष्य यदि ज्ञान प्राप्त किए बिना गलत मार्ग यानी भोग मार्ग पर चलता है तो वह अपने लक्ष्य से दूर होता चला जाता है। भोग मार्ग की चकाचौंध हमें सम्मोहित करके भौतिक शारीरिक सुख–सुविधाओं का आकर्षण दिखा कर अपनी ओर आकर्षित करती है। इसी चकाचौंध के आकर्षण के सम्मोहन में फँसा मनुष्य इस तथाकथित विकास के नाम पर अपने विनाश की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो जाता है। यह तथाकथित पाश्चात्य अंधानुकरण की भोगवादी खाओ पियो मौज करो की संस्कृति हमें तात्कालिक रोमांच तो देती है लेकिन हमने विनाश का कारण बनती है। यह भोग मार्ग वैसा ही है जैसे पहाड़ की चोटी की ऊँचाइयों से बड़ी तेजी के साथ नीचे इजिहास के गर्त की खाइयों में तीव्र गति के साथ लुढ़कते चले जाना और वहाँ पहले से मौजूद अनेक संस्कृतियों जैसे रोमन मिस्त्र की संस्कृतियों का अट्टहास करना। आओ तुम भी हमारी भाँति इतिहास के गर्त में समा जाओ।

इसलिए यदि हम सही मायनों में अपने अर्थात् जीवात्मा रथी शरीरी देही के बारे में जान कर अपने साध्य अर्थात् परमपिता परमेश्वर के सत्य स्वरूप अर्थात् सत्य, चेतन, आनन्द, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी, नित्य पवित्र सृष्टिकर्ता न्यायाधीश, दयालु, पालक, अजर, अमर, अविनाशी को अनुभूत करना चाहते हैं और जीवन के उद्देश्य अर्थात् जन्मजाल के बंधन से छूट मोक्ष को प्राप्त करना चाहते हैं तो ईश्वर प्रदत्त साधन अर्थात् मनुष्य तन, देह, शरीर, रथ का सदुपयोग इस सांख्य ज्ञान योग से प्राप्त करके कर सकते हैं।

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

मेघालय हाईकोर्ट न्यायाधीश के भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की वकालत का हिन्दू महासभा ने किया समर्थन, केन्द्र सरकार से कानून बनाने की मांग

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने मेघालय हाईकोर्ट के न्यायाधीष न्यायामूर्ति एस.आर.सेन द्वारा भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की वकालत का पूर्ण समर्थन किया है तथा केन्द्र की राज्य सरकार से भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिये संसद में शीघ्र कानून बनाने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि न्यायामूर्ति एस.आर.सेन की यह बात सौ प्रतिशत सही है कि यदि भारत इस्लामिक देश बना तो यह भारत और पूरी दुनिया के लिये कयामत होगा। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि धर्मातरण एवं लव जेहाद के द्वारा बड़े पैमाने पर हिन्दू लड़कियों का विवाह मुस्लिम युवकों से कराकर हिन्दू लड़कियों को बच्चे पैदा करने की मशीन बना दी जाती है। हर मुस्लिमों के कम–से कम १०–१५ बच्चे होते हैं। इससे मुस्लिमों की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। और हिन्दुओं का अनुपात घटता जा रहा है। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि जिस दिन भारत में मुस्लिम आबादी हिन्दुओं से अधिक हो जायेगी, उसी दिन भारत इस्लामिक देश बन जायेगा। हिन्दू महासभा नेताओं ने संसद में कानून बनाकर भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने, जनसंख्या नियंत्रण के लिये समान आचार संहिता लागू करने तथा एक विवाह और केवल दो बच्चे का कानून बनाने की मांग की है। उन्होनें कहा कि कानून ऐसा हो, जिसमें दो से अधिक बच्चे पैदा करने वाले का मताधिकार समाप्त कर दिया जाये।

शेष पृष्ठ 1 का
पड़ोसी देशों में चीन की..........

आर्मी पर समय रहते नकेल कसने की सराहना की है। समिति ने मामले को सुलझाने में विदेश मंत्रालय के कूटनीतिक प्रयासों की प्रशंसा की। समिति का मानना है कि बिना किसी खून खराबे के इस मामला को सुलझा लिया गया। समिति ने भारत सरकार की इस मामले में सराहना करते हुए कहा कि भारत चीन को यह संदेश देने में कामयाब रहा कि भारत सीमा पर चीन की किसी भी नापाक कोशिश कर सकता है। संसद की स्थायी समिति ने अपनी रिपोर्ट में चीन द्वारा निर्मित वन बेल्ट, वन रोड़ कॉरिडोर प्रोजेक्ट पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि यह भारत की सुरक्षा और संप्रभुता को प्रभावित कर रहा है। कमेटी के मुताबिक वन बेल्ट, वन रोड कॉरिडोर प्रोजेक्ट के जरिए चीन भौगोलिक वित्तीय नायकत्व स्थापित करना चाहता है। चीन ने ओबोर पाकिस्तान को उपहार में दिया है। कमेटी के मुताबिक चीन की इस दोहरी मानसिकता को एक्सपोज करना चाहिए। वन बेल्ट, वन रोड कॉरिडोर को काउंटर करने के लिए भारत को एक्ट ईस्ट पॉलिसी, पड़ोसी नीति, गो वेस्ट रणनीति और स्पाइस रूट से जुड़े कनेक्टिविटी प्रोजेक्टों पर काम करना चाहिए। फिर भी भारत को सचेत रहने की आवश्यकता है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार से भारतीय विदेश मंत्रालय को सक्रिय करने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि हमें चीन के प्रभुत्व को समाप्त करना होगा।

शेष पृष्ठ 8 का
मैं अंकोरवाट बोल...........

वनों ने मुझे तथा मेरे गौरव को सम्भ्य जगत से पृथक कर मुझे अज्ञात अन्धकार में ढकेल दिया, किन्तु मेरे अन्दर रची–बची सनातन धर्मआस्था मेरी जिजीविषा को बनाये रखने में सहायक रही।

१६वीं शताब्दी के मध्य में फ्रांसीसी प्रकृति विज्ञानी हेनरी महोत ने मुझे एक गुमशुदा नगरी के रूप में पुनः खोज निकाला और मेरे जीर्णोद्वार का पुरजोर प्रयास किया। नवीं शताब्दीं में अस्तित्व में आना, पुनः जयवर्मन सप्तम द्वारा जीर्णोद्वार, फिर अज्ञातवास में चले जाना और तदनन्तर विश्व के सामने लाये जाने की कहानी में कितने चरित्र, कतने अवसर अविस्मरीणीय हैं, उनका संक्षेप में वर्णन करने लगूं तो भी एक विशाल ग्रन्थ तैयार हो जायेगा। किसी भी स्थान की संस्कृति, साहित्य, कला को संरक्षण शासन के अतिरिक्त व्यक्तिगत स्तर पर भी होता है। यही कारण है कि अपने बारे में बताते समय मुझे भी संकोच है कि उन सभी के विषय में विस्तार से कब बताऊँ। खैर आगे चलते हैं। मुझे विश्वफलक पर पुनर्स्थापित करने के उद्देश्य से यूनेस्को ने विश्व धरोहरों की श्रेणी में स्थान दिया। वर्ष १६८३ में कम्बोडिया के राष्ट्रध्वज में स्थान मिलना मुझे स्थापित करने की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण सोपान रहा। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में सम्बद्धता के क्रम में वर्ष १६८३ से १६६३ तक मेरे संरक्षण का दायित्व अपने भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण विीाग का रहा।

विभिन्न कालखण्डों में होने वाली शनैः शनैः शासकीय उपेक्षा ने मुझ पर ग्रहण लगाने के प्रयास तो किये किन्तु जिस प्रकार विशिष्ट देव प्रतिमा को अवसरा मिलता ही है मुझे भी स्वयं को प्रस्तुत कररने का अवसर मिलता रहा।

शैव, वैष्णव तथा बौद्ध परम्पराओं के पौराणिक इतिहास को मूर्त रूप में सहेजे मैं मूक रहकर अपनी बात अपनी जड़ों तक पहुँचा सकूँ, इसके लिए आये हुए साधकों से बस इतना निवेदन करता हूँ कि वे अपने–अपने तरीके से एक बार और सम्पूर्ण भारतवर्ष तदुपरांत सम्पूर्ण विश्व को मेरा परिचय प्रदान करने की कृपा करें।

शेष पृष्ठ 4 का
बार-बार होता गर्भपात.....

के मुरब्बे अथवा दूध के साथ देने से गर्भ पुष्ट हो जाता है। इसमें कैल्शियम होने से गर्भिणी में विटामिन्स की कमी दूर हो जाती है।

आयुर्वेद ग्रन्थों में प्रत्येक मास में गर्भपात एवं गर्भस्राव की चिकित्सा वर्णित है। इसलिए प्रत्येक मास में होने वाली गर्भिणी के विकार को ध्यान में रखते हुए उन दोषों के निवारणार्थ संक्षिप्त रूप से वर्णन किया जा रहा है–

पहले महीने : मुलहेठी, शाकबीज, किशमिश, देवदारु तथा चन्दन से सिद्ध किया दूध सेवन कराएँ।
दूसरे महीने : कांचनार, तगर, कपूर एवं कमल से सिद्ध दूध दें।
तीसरे महीने : नागकेशर, क्षीरका–कोली एवं बादाम से सिद्ध दूध दें।
चौथे महीने : अनन्तमूल, काला–सारिवा, रास्ना, भारंगी, मुलहेठी योग से सिद्ध दूध पिलाएँ।
पाँचवे महीने : छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गम्भारी, क्षीरी वृक्षों का अंकुर एवं छाल से सिद्ध दूध पिलाएँ।
छठे महीने : पृश्निपर्णी, गोखरू, मुलहेठी एवं सहिजन से युक्त गौदुग्ध का सेवन कराएँ।
सातवें महीने : नागकेशर, मुनक्का, गोखरू, मुलहेठी एवं मिसरी से सिद्ध दूध पिलाएँ।
आठवें महीने : लोध्र तथा बड़ी पीपल का चूर्ण, शहद एवं घृत (असमान मात्रा) के साथ सेवन कराएँ। (यह मात्रा वैद्य से पूछकर ही सेवन कराएँ) अथवा छोटी–बड़ी कटेरी, बेल, कैथ एवं परवल में सिद्ध दुग्ध का सेवन कराएँ।

गर्भपात/गर्भस्राव की स्थिति में खास निर्देश

- रोगिणी को पूरा विश्राम करना है।
- विरेचन, वस्ति (एनिमा), डूश नहीं करना।
- भोजन हल्का, सुपाच्य, फल–हरी सब्जियाँ, जूस आदि देना है।
- गरम तासीर वाला भोज्य पदार्थ सेवन न करें।
- अधिक परिश्रम न करें।
- किसी भी प्रकार के वेगों को न रोकें, कब्ज न रहने दें।
- गर्भाशय को शुद्ध रखें।
- यदि गर्भाशय का मुख फैल गया हो तथा गर्भ का कुछ भाग बाहर दिखाई दे तो उसे कदापि न रोकें तुरन्त डॉक्टर के पास जाएँ और ट्रीटमेंट लें।
- गर्भ की मृत्यु हो जाने पर गर्भाशय को तुरन्त खाली (साफ) करा दें।

शेष पृष्ठ 1 का
राजनीति में हावी होने को.......

यह हिन्दू धर्म की जीत है कि लोग राजनीति में हावी होने के लिए अपना गोत्र बताने और जनेऊ दिखाने लगे हैं। योगी ने कहा कि आज देश की राजनीति में हावी होने के लिए लोग अपना गोत्र और जनेऊ भी दिखाने लग गए हैं। वह जो लोग कहते थे कि हम एक्सीडेंटल हिंदू हैं, आज उनको एहसास हो रहा है कि नहीं हम भी सनातन हिंदू ध र्मावलंबी हैं। योगी ने कहा कि कुंभ शब्द लोगों में प्रचलित होना शुरू हुआ है, कुंभ अपने आप में एक फैशन का विषय भी बन गया है। साथ ही यह अपने कार्यक्रम की ब्रांडिंग के लिए ट्रेडमार्क भी बन गया है। जो लोग कुम्भ की आलोचना कर रहे हैं वे भारतीय संस्कृति को ध्वस्त करने में लगे हैं। वे विदेशी मदद से भारत का अपमान करने की साजिश रच रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज सबरीमला मुद्दे पर हिन्दू धर्म को बदनाम करने की कोशिश की जा रही है, जबकि इस मंदिर से जुड़ी परम्परा के बारे में हर कोई जानता है। ऐसे लोग जो कभी मंदिर नहीं गये, वे इस मुद्दे पर बयान जारी कर रहे हैं। ऐसा ही माहौल कुम्भ को लेकर भी बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वेदों के ज्यादातर श्लोक दलित संतों द्वारा ही तैयार किये गये हैं। रामायण को महर्षि वाल्मीकि ने लिखा था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि देशवासियों को बरसाती मेंढकों से सावधान रहने की आवश्यकता है। बरसाती नेता चुनाव के समय अपना रंग बदल लेते है। कांग्रेस, भाजपा सहित सत्ता में रहने वाली पार्टियों ने अभी तक भगवान राम के जन्मस्थान पर मंदिर बनने नहीं दिया। अब ये सभी पार्टियां हिन्दुओं की हितैषी होने का ढोंग कर रही है।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 9 का सम्पूर्णता का पर्याय........

पुनरावर्तन होता है।'' (वही ४.४) मनुष्य लोक या चन्द्रलोक भौगोलिक धारणाएँ नहीं हैं। ब्रह्माण्ड का मन चन्द्र कहा गया है। चन्द्रलोक का अर्थ हुआ मनोमय संसार। यजुर्वेद के मंत्रों से प्रायः यही संदर्भ आये हैं। आगे बताते हैं, ''तीन मात्राओं से ओइम् का ध्यान निरंतर करने वाले सूर्यलोक में जाते हैं। जैसे साँप अपनी देह का ऊपरी भाग त्यागता है। वैसे ही ऐसा उपासक विकार मुक्त हो जाता है। तब सामवेद के मंत्र उसे ब्रह्म लोक ले जाते हैं। वह परम तत्त्व से भी श्रेष्ठ परम पुरुष को पाता है। ओंकार की तीनों मात्राओं का अलग–अलग सदुपयोग या संयुक्त प्रयोग तमाम उपलब्धियाँ दिलाता है। ऐसा साधक विचलित नहीं होता (वही ५.५ व ६) अब सारांश बताते हैं, ''एक मात्रा की उपासना मनुष्य लोक, दो की उपासना अंतरिक्ष या चन्द्रलोक देती है। पूर्ण रूप से ओंकार की उपासना ब्रह्म लोक तक पहुँचाती है। ज्ञानी यह तत्व जानते हैं। विवेकशील साधक ओंकार द्वारा ही परमब्रह्म को उपलब्ध होते हैं। यह लोक मृत्यु रहित है। अजर अमर है। (वही ७) तैत्तिरीय उपनिषद् मार्क्सवादियों द्वारा भी भौतिकवादी मानी जाती है। इसके चतुर्थ अनुवाक् में कहते हैं, ''जो वेद छन्दों में सर्वश्रेष्ठ विश्वरुप है, वेदों से अमृतरूप प्रधानरूप में प्रकट हुआ है। वह ओंकार सबका अधिपति (स्वामी) मुझे मेधायुक्त बनाये, अमृत का धारक बनाये, मेरा शरीर विशेष स्वस्थ हो। मेरी जीभ मधुमती हो। कानों से खूब सुनूँ। आप बुद्धि से (बुद्धि नाम, रुप से परिचय पाती है) ढँके हुए हैं। मेरे द्वारा सुने गये तत्त्व (श्रुतं में गोपाय) की रक्षा करें।'' यहाँ ओइम्कार से शरीर रक्षा, जीभ कान की सुरक्षा और बुद्धि की तीव्रता माँगी गयी है। यहाँ ओइम्कार स्वास्थ्य देने वाली परम औषधि और बुद्धि देने वाली दिव्य ऊर्जा भी है। पिप्पलाद का विवेचन दार्शनिक के साथ साथ भौतिकवादी भी हैं। सुखों की प्राप्ति के सारे कर्म अंततः संसारी ही है।

शेष पृष्ठ 7 का लोकतंत्र में शरई अदालतों........

निजी कानून होते हुए भी एक अलग न्याय व्यवस्था खड़ी करने लगें तो क्या परिणाम होंगे? मुस्लिम समाज के नेताओं के पास कौम की चिन्ता के लिए बहुत से जरूरी सवाल हैं। उन्हें अपनी सोच और अपने रोल मॉडल यानी आदर्श, दोनों ही बदलने की जरूरत है। जिन अरब देशों की एक–एक बात को वे अकीदत (श्रद्धा) से अपना लेना चाहते हैं, उन्हें अगर ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड भेड़ें देना बन्द कर दें, तो वे हज में कुर्बानी भी नहीं दे सकेंगे। अमेरिका, यूरोप उन्हें गाड़ियाँ और विमान देना बन्द कर दें, तो वे घरों में कैद होकर रह जायेंगे। दुनिया के बेहतरीन १०० विश्वविद्यालयों में एक भी इस्लामिक दुनिया से नहीं है। जितने रिसर्च पेपर पूरे इस्लामिक देशों में निकालते हैं, उससे ज्यादा रिसर्च पेपर अकेले बोस्टन शहर में निकलते हैं। अरब देशों ने बीते पाँच सौ सालों में दुनिया को कोई नयी दवा, नया तत्त्व ज्ञान, नया खेल, नया कानून, नया हथियार नहीं दिया। बावजूद इसके हमारी तंजी में अरब देशों को रोल मॉडल मानकर हर वह गलती फक्र से करती हैं, जो इन देंशों के लोग कर रहे हैं। शरई अदालत स्थापित करके हम मुसलमानों को सदियों पीछे ले जाना चाहते हैं। इस्लाहे मुआशरा (समाज सुधार) के बहुत से काम करने बाकी हैं। उन पर हमारा ध्यान जाना चाहिए। जब कौम को शिक्षित बनाने और उसमें चेतना पैदा करने का काम बाकी है, तब कोर्ट–कचहरी खड़ा करने जैसा गैरजरूरी काम कौम को आगे लेकर नहीं जा सकता।

शेष पृष्ठ 5 का कर्तव्य पथ के महानायक......

की स्वीकार्यता चाहते हैं। सीता चरित्र के उच्चतम स्तर तक पहुंचती हैं। यहाँ से सम्पूर्ण समाज सदियों तक सीता के साथ खड़ा मिलेगा। राम विभिन्न खांचों में विभाजित जातीय समूहों को जोड़ते एवं सूत्र में पिरोते चले हैं। सुग्रीव और जामवंत अलग अलग सामाजिक वर्गों से थे, लेकिन वे दोनों समूह राम के सैनिक बने। अनेकता में एकता की राष्ट्रीय धारणा के आदि पुरुष राम हैं। राम राष्ट्र नायक हैं और निर्बलों को सत्ताधिकार देने वाले भी। वह आर्य भी हैं और द्रविड़ भी। शैव भी और वैष्णव भी। वस्तुतः इसलिए वह आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम हैं उन्होंने आदर्शों की स्थापना के लिए अनगिनत त्याग किये और वह भी कर्तव्य भाव से। इसलिए वह कर्तव्य पथ के महानायक भी हैं और जन–जन के उद्धारक भी।

शेष पृष्ठ 6 का खमांलीथ तथ्यों पर आधारित......

हुआ लगभग २६००० वर्षो के बाद फिर १४ जनवरी को आएगा। इसलिए उत्तरायण के स्वागत के लिए कार्यक्रमों का आयोजन २२ दिसम्बर को उत्साहपूर्वक किया जा सकता है। जिस तरह भारत की राष्ट्रीय पहचान के तत्वों पर टी. वी. व उपदृश्य मीडिया पर रात दिन कार्यक्रम दिखाये जाते है– कभी अशोक चक्रान्तित ध्वज पर, कभी राष्ट्रीय पक्षी मोर, पर राष्ट्रीय प्रस्थ कमल पर, राष्ट्रगान जनगणना या राष्ट्रगीत वन्देमातरम, राष्ट्रीय नदी गंगा पर विवाद आते रहते हैं हम राष्ट्रीय केलेण्डर 'शका युगाब्द'' (एरा) पर खुलकर चर्चा क्यों न करें। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय केलेण्डर का ११ आश्विन सन् १६४० का ''चन्द्रमास वर्ष शक ५१२० था।

यहाँ एक विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक प्रसंग का जिक्र आज के शक या शालिवाहन युगाब्द जिक्र करना सभीचीन होगा। विजयनगर साम्राज्य के महान सम्राट कृष्ण देव राय जिनकी इसी १६ फरवरी २०१८ को अपने साम्राज्य की स्थापना व चक्रवर्ती सम्राट के रूप में राज्याभिषेक की जयन्ती मनाई गई थी हमने शायद एक प्रतीकात्मक महोत्सव के रूप में याद तो किया पर वस्तुतः अनदेखा कर दिया, सम्राट कृष्णदेव राय (१५०६ ई.–१५२६ ई.) के पूर्वजों ने एक महान साम्राज्य की नींव रखी थी। जो (लगभग १३५० ई. से १५६५ ई.) कहा गया है। देवराय ने इसे विस्तार दिया और मृत्यु तक अक्षुण्ण बनाए रखा। विजय नगर साम्राज्य की स्थापना इतिहास की एक कालजयी घटना है। राज्य की प्रमुख राजधानी का नाम हम्पी और डम्पी था। हम्पी के विस्तृत महलों व मंदिरों के खण्डहरों को देखकर जाना जा सकता है कि यह कितना भव्य रहा होगा, चाहे नोबेल पुरस्कार विजेता वी. एस. नायपाल हो या वीरद चौधरी या बी. बी. सी. की प्रसिद्ध चैनल –४ के प्रतिणित निर्माता फारुख ढ़ोंढी हों उन्होंने कहा कि विश्व धरोहर के रूप में हर भारतीयों को यदि वहां एक बार भी जाने का अवसर मिले तो ऐसे विश्व विध्वंस व व्यापक नरसंहार पर उसके आंसू निकले बिना नहीं रह सकते है। यह सिर्फ राष्ट्रसंघ के यूनेस्को के मानचित्र की नाम के लिए एक विश्व धरोहर नही है बल्कि सदियों के जीवन्त इतिहास का एक ऐसा इतिहास है जो बदलते समय के तेवरों का एक स्थायी इतिवृत है। जिस तरह वर्तमान में न्यूयार्क, दुबई और हांगकांग या मुम्बई विश्व व्यापार और आधुनिकता के शहर हैं, वैसे ही उस काल में 'हम्पी' हुआ करता था भभूतीय इतिहास के मध्यकाल में दक्षिण भारत के विजय नगर साम्राज्य की लगभग वैसे ही प्रतिष्ठा थी जैसे प्राचीनकाल में मगध, उज्जयिकी, वाराणसी या यानेश्वर के साम्राज्य को प्राप्त की थी। कृष्णदेव राय की ख्याति उत्तर के चंद्रगुप्त मौर्य, पुष्यमित्र चंद्रगुप्त विक्रमादित्य, समुद्र गुप्त, हर्षवर्धन और महाराजा भोज से कम नही थी। जिस तरह उत्तर भारत में महाराणा प्रताप, शिवाजी महाराज, पृथ्वीराज चौहान, बाजीराव आदि सबने अपना सर्वस्व मातृ भूमि पर न्योछावर कर दिया था उसी तरह दक्षिण भारत में राजाकृष्ण देव राय और उसके पूर्वजों से मातृभूति की सत्ता के लिए किया था। विजय नगर साम्राज्य की स्थापना पांच भाईयों वाले परिवार के दो सदस्यों ने १३३६ ई. में हरिहर और बुक्का ने की थो जिनके पिता को दबाव व छलछद्म से मुस्लिम बना लिया गया था। उनकी संतति ने जो मुस्लिम पैदा हुई थी घोर प्रतिशोध की भावना सी इतिहास में पहली बार फिर शावक्त या लिंगायत सम्प्रदाय के हिन्दू धर्म में दीक्षित होकर जिस तरह दक्किखी मुस्लामी रियासतों व निजाम की रजाकोरी सेनाओं से ३०० वर्षो से अधिक नई नीतियां अपनाकर उनका विश्वास जीत कर फिर उनका नरसंहार करा और कराया वह डा. मुलक राज आनन्द के टाटा समूह की आर्थिक सहायता प्राप्त ''मार्ग'' त्रैमासिक अंग्रेजी पत्रिका) में जो चित्रों के साथ अंकित किया गया है वह शायद आज भी भारतीय–शिक्षित व अशिक्षित–धार्मिक व अनीश्वरवादी–दोनों कल्पना ही नहीं कर सकते हैं। **(शेष अगले अंक में)**

शेष पृष्ठ 2 का जन सेवा है स्वर्ग........

कलंक भी साहिब हो रहे है। कुछ एनजीओ प्राप्त धन का दुरूपयोग करते हैं। कई बार धार्मिक, सामाजिक तथा शैक्षिक संस्थाओं में कुप्रबंधन तथा भ्रष्टचार के मामले देखने में आए हैं। कई बार कुछ महिला संस्थाओं में यौन शोषण के मामले जनसेवा के पुण्य काम पर बट्टा लगाते हैं।

किसी गरीब, अनाथ, बेसहारा, जरूरतमंद, प्यासे, भूखे, ददुर्घटनागस्त व्यक्ति की मदद करके देखों, मन को सुकुन, शांति तथा राहत तो मिलेगी ही, इस सेवा भावना में परमात्मा की प्राप्ति का ऐहसास भी होगा।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री। आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य..1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर ''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

रमजान में इस्लाम जगत् लहूलुहान

साप्ताहिक नयी दुनिया (११ जून) ने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि रमजान के पवित्र महीने में भी विश्वभर में मुसलमानों का कत्लेआम जारी है। सीरिया हो या यमन या फिलिस्तीन या फिर इराक, सभी जगह बेगुनाह मुसलमानों के खून की होली खेली जा रही है। गरीबी और अकाल का दौर चल रहा है। बेगुनाह नागरिकों को बमबारी का निशाना बनाया जा रहा है। यह बहस अलग है कि कौन लड़ाई कर रहा है और किसका खून बहाया जा रहा है। समाचार पत्र ने आरोप लगाया कि विश्व शक्तियाँ जानबूझकर मध्य–पूर्व के अरब जगत् की समस्याओं को हल करने की बजाय जलती आग पर घी डालने का काम कर रही हैं। रमजान के महीने में भी उनके लिए इबादत करना सम्भव नहीं रहा। इस्लामिक जगत् में ऐसे देशों की लम्बी सूची है जो कि युद्ध और गृहयुद्ध के कारण मलबे का ढेर बन गये हैं। लोग राहत शिबिरों में डेरे डाले हुए हैं। इस्लामिक जगत् का एक बड़ा वर्ग रमजान मुबारक की रौनक से वंचित है। हालाँकि सीरिया में गृहयुद्ध अब कम हो चुका है। मगर फिर भी राख के ढेरों से धुँआ उठ रहा है। जगह–जगह बेगुनाह लोगों की लाशें पड़ी हुई हैं। गत सात वर्ष से सीरिया गृहयुद्ध को झेल रहा है। गृहयुद्ध के कारण हजारों लोग बेघर हो गये हैं और कई हजार बेगुनाह मारे गये हैं। तबाह–हाल लोगों के आवास मलबे के ढेर में बदल गये हैं। बमबारी में लोग मस्जिदों में नमाज अदा कर रहे हैं। अब मगर यमन की बात करें तो लोगों की समझ में यह बात नहीं आ रही कि सऊदी अरब अब उन्हें क्यों कफनों में दफन करना चाहता है। तीन वर्ष से यमन पर सऊदी अरब के हमलों ने इस गरीब देश की ईंट बजा दी है। क्या बच्चे, बूढ़े, महिला सब बेहाल हैं। चालीस हजार से अधिक बेगुनाह मारे जा चुके हैं और अब भी खूनी खेल जारी है। डेढ़ लाख नागरिक भूख के शिकार हैं और उनके पास सिर ढकने के लिए जगह नहीं है। सबसे खतरनाक बात यह है कि सऊदी अरब के विमानों को जहाँ भीड़ नजर आती है, वहीं बमबारी करते हैं चाहे वह भीड़ जनाजे की हो या फिर निकाह की। फिलिस्तीन में गाजा दुनिया की सबसे बड़ी जेल बन चुका है, जहाँ बीस हजार फिलिस्तीनी नर्क की जिंदगी गुजार रहे हैं। खाने–पीने का संकट है और यहूदी हमलों का खतरा सिर पर लटक रहा है। रमजान के महीने में भी इजरायल युद्धविराम करने के लिए तैयार नहीं है और वह गाजा को बराबर बमबारी का निशाना बना रहा है। एक ओर तो अरब देश तेल की दौलत से मालामाल हैं और दूसरी ओर वह तबाह–हाल लोगों की कोई मदद के लिए तैयार नहीं हैं।

पाकिस्तान में सिख नेता की हत्या

साप्ताहिक नयी दुनिया (१८ जून) के अनुसार पाकिस्तान में एक ऐसे सिख को आतंकवादियों ने गोली मार दी है जो कि रमजान के महीने में पेशावर के अस्पतालों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर रोजा इफ्तार का आयोजन करता था। मरने वाले व्यक्ति का नाम चरणजीत सिंह सागर है। उन्हें तालिबान ने अपनी गोली का निशाना बनाया। हाल में ही उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा था कि हो सकता है कि मुझे पेशावर की इन गलियों में कोई आतंकी गोली से उड़ा दे; मगर मैं पाकिस्तान को छोड़ने के बारे में सोच भी नहीं सकता। पेशावर में इस समय पन्द्र हजार से अधिक सिख आबाद हैं जो इस समय मोहल्ला जोगन शाह की गलियों मे रहते हैं। इन्हें कई समय से आतंकवादियों द्वारा मौत के घाट उतारने की धमकियाँ मिल रही हैं। कुछ की हत्या आतंकवादियों ने की है और कई के पैतृक स्थानों पर जबरन कब्जा किया है। यह लोग कबाइली क्षेत्रों से पेशावर आये थे और फिर वहीं बस गये। इन पर पठानों का सांस्कृतिक प्रभाव है। ये लोग अपने आपको अफरीदी कहते हैं। १९४७ में देश के विभाजन के समय क्योंकि इस क्षेत्र में खान अब्दुल गफ्फार खान का प्रभाव था इसलिए इनको वहाँ के मुसलमानों ने भारत पलायन करने नहीं दिया। कुछ वर्ष पूर्व उन पर इस बात के लिए दबाव डाला जा रहा था कि अगर उन्हें यहाँ रहना है तो वे मुसलमान बन जायें या जजिया दें। उनके एक नेता सरदार कल्याण सिंह को तालिबान ने बंधक बना लिया था और उनकी रिहाई के लिए पाँच करोड़ रुपये की माँग की थी। पाकिस्तान सरकार क्योंकि उन्हें मुक्त करवाने में विफल रही थी इसलिए पाकिस्तानी सिखों ने आपस में चंदा एकत्रित करके एक करोड़ रुपये कर रकम आतंकवादियों को दी थी। इसके बाद उन्हें कैद से रिहा किया गया था। इन दिनों पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा क्षेत्र में तालिबान का बोलबाला है और वे पेशावर शहर में अब तक दस सिखों की हत्या कर चुके हैं।

कबिरा खड़ा बजार में

हार से सबक ले भाजपा

तीन राज्यों में भाजपा की हार निश्चित रूप से उसे मंथन करने का एक बड़ा कारण दे दिया है, क्यों कि यह हार बीजेपी के साथ–साथ उसके आंशिक अहंकार की भी है, लेकिन जीत कांग्रेस की नहीं किसानों की है। २०१४ में बीजेपी की सरकार बनी, नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने। शुरुआत में पीएम मोदी ने कुछ ऐसे कदम भी उठाए थे, जिसकी तारीफ होने लगी, लेकिन धीरे–धीरे सरकार की कई योजनाएं फ्लॉप साबित हुईं। वर्ष २०१४ की बात है तब लोकसभा चुनाव में लोग सिर्फ मोदी की तारीफ कर रहे थे। उन्हें लग रहा था कि मोदी ही देश को आगे ले जाएंगे। २०१४ में मोदी वेव सब ने देखा है। उस समय एक तरफ कांग्रेस के ऊपर भ्रष्टाचार के कई आरोप लगे थे दूसरी तरफ मोदी की शानदार भाषण ने लोगों के मन मे एक उम्मीद जगाई थी। किसानों को नरेंद्र मोदी सरकार से काफी उम्मीद थी, लेकिन उस उम्मीद पर सरकार अभी तक खरी नहीं उतर पाई है। पांच राज्यों के चुनाव परिणाम यह दर्शाते है कि लोग बीजेपी से बहुत ज्यादा खुश नहीं है। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में बीजेपी की बड़ी हार है। तीनों राज्यों में बीजेपी की सरकार थी। यह हार सिर्फ बीजेपी की नहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भी है। बीजेपी की बड़ी हार है, लेकिन इस चुनाव में हीरो कांग्रेस नहीं बल्कि किसान है, आम आदमी है। लोगों ने कांग्रेस को नहीं जिताया है बल्कि बीजेपी को हराया है। जिन किसानों ने २०१४ में बीजेपी को वोट दिया था, वो अब बीजेपी के खिलाफ बोल रहे थे। सरकार मूल्य बढ़ाने की बात करती है लेकिन किसानों से अनाज सीधे नहीं खरीदती है, जिसके कारण किसान को अपने अनाज को कम दाम में बेचना पड़ रहा है। सितंबर के महीने में हजारों किसान १५ दिन तक पैदल और ट्रैक्टर में सफर करने के बाद इसीलिए दिल्ली पहुंचे थे, ताकि अपना दुख दर्द सरकार को बता सकें। इस रैली में मध्य प्रदेश के मालवा इलाके से आये किसान बहुत परेशान थे और यह कह रहे थे कि उनकी समस्या का कोई समाधान नहीं हुआ। मालवा इलाके में इस बार बीजेपी बुरी तरह हारी है। किसानों का वोट बीजेपी के खिलाफ गया है। राजस्थान और छत्तीसगढ़ के किसान भी अपना दुख–दर्द बता रहे थे। सरकार फसल बीमा की बात करती रहती है। लेकिन फसल बीमा से किसानों को कम बीमा कंपनियों को ज्यादा फायदा है। कृषि मंत्रालय के आंकड़े के हिसाब से २०१६ और २०१७ में खरीफ फसल के लिए जो बीमा हुए थे उस मे बीमा कंपनियों को १०००० करोड़ के करीब फायदा हुआ है। इससे पता चलता है कि किसान फसल बीमा को लेकर जो सवाल उठा रहे हैं वो सही है। रैली के दौरान कई किसानों ने कहा था कि फसल बीमा नहीं कि बल्कि बेकार बीमा है। सिर्फ किसान नहीं आज युवा भी नाराज है। यह हार बीजेपी के साथ–साथ उनसे राम मंदिर निर्माण की अपेक्षा कर रहे थे। किसान और आम आदमी परेशान होकर जब सड़क से संसद तक प्रदर्शन कर रहा है। लेकिन आप आम आदमी को दरकिनार नहीं कर सकते हैं। यही लोकतंत्र है। आगे किसान और युवा ही देश का भविष्य तय करेगा। किसानों ने कांग्रेस के लिए एक विकल्प तैयार कर दिया है। लेकिन कांग्रेस की यह जीत स्थाई नहीं दिखाई दे रही है।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 26 दिसम्बर से 01 जनवरी 2019 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।